मई 2004
Rs. 10 /-
चन्दामामा

NOW AVAILABLE
AT ALL LEADING STORES

GAMES AND ACTIVITY CD-ROM
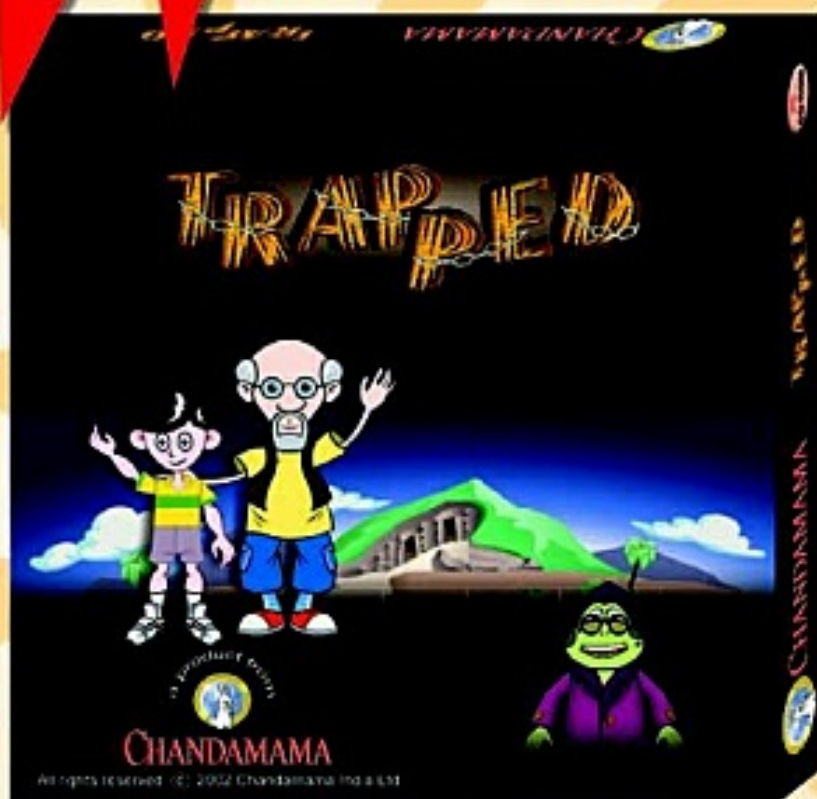
PROF. PURENOTHIN, THE RENOWNED INDOLOGIST, IS TRAPPED INSIDE THE MOUND OF MURUKKI. YOU JOIN DETECTIVE MANDOO TO SEARCH FOR THE PROFESSOR AND SAVE HIM. THE ONLY WAY TO THE MOUND OF MURUKKI IS REVEALED TO YOU. ONLY WHEN YOU CAN GET HOLD OF FOUR KEYS HIDDEN ALONG YOUR ROUTE. AND YOU HAVE TO SEARCH FOR THEM THROUGH A DOZEN DIFFERENT GAMES AND ACTIVITIES. GO FOR CLUES AND KEYS!

MIND YOU, YOU HAVE ONLY 60 MINUTES TO REACH THE PROFESSOR! GET THERE FAST, BUT BEWARE OF YOURSELF BEING TRAPPED!

Hey, but this one is a whole lot of fun!
You have a different set of games and activities, every time you begin your search.

A quality product from **Chandamama**

For more details, please contact :
Chandamama India Limited,
82, Defence Officers' Colony,
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097.
www.chandamama.org

RS. 199/- ONLY

ENTER

nutrine & CHANDAMAMA

OLYMPIC QUIZ CONTEST AND WIN ATTRACTIVE PRIZES!

BUMPER PRIZE

Acer Computer

1ST PRIZE

3 Cameras

2ND PRIZE

10 calculators

Beginning from May, your favourite monthly magazine Chandamama in English and all its language editions will carry Nutrine - Chandamama contests for 6 months. All you have to do is to choose the right answers, **fill in the entry form and mail this page, along with 5 wrappers of 'Nutrine Chocolate Eclairs'**, before the closing date, to **Nutrine Chandamama Contest, Chandamama India Limited, 82, Defence Officers's Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097.**

It is an all India contest. Every month there will be different questions. There are fabulous prizes to be won. Watch out every month and participate. There will be 3 Konica cameras, 10 Calculators, and 50 Nutrine sweet hampers as first, second and third prizes respectively every month. At the end of the 5 monthly contests, the 6th contest offers a Bumper Draw and the winner will get a Personal Computer, in addition to the regular prizes. Participation in all the 6 months only will entitle the entries for the Bumper Draw. Results of the Bumper draw will be announced in December by post.

NUTRINE CHANDAMAMA OLYMPIC QUIZ CONTEST

Study the questions carefully and tick [v] the correct answer in the blanks provided for each question.

1. The Olympic Games was revived after a gap of more than 2,200 years. Where was it held?
   London ☐ Paris ☐ Athens ☐
2. Which country won the most medals in the first of the Modern Olympic Games?
   England ☐ Greece ☐ USA ☐
3. In which Olympic Games was the Olympic Flame reintroduced?
   Amsterdam ☐ Berlin ☐ Moscow ☐
4. Which Olympic Games had the maximum number of participating nations?
   Sydney ☐ Atlanta ☐ Seoul ☐

5. You will find, in the advertisement of Nutrine appearing in this issue, some children enjoying a tasty nutrine chocolate. How many times does the leter 'R' appears in that advertisement?
   3 ☐ 6 ☐ 8 ☐ 9 ☐

DID YOU KNOW?

OLYMPIA, in Greece, was believed to be the abode of the Greek Gods. Sports festivals were a way of life in Greece as far back as 1370 B.C. According to Greek mythology, Kranos, a Greek God, and Zeuss, the father of Greek Gods, fought on Mount Olympus for the possession of the Earth. Zeuss won and threw a great sports party to celebrate his victory. This is how Olympic Games began.

Contest Rules :-

● Employees of Nutrine, Chandamama and their relatives are not eligible for the contest ● The selection of the Judges will be at the sole discretion of Nutrine ● Children of Indian Origin below 15 years age group alone are eligible for the contest. ● Nutrine reserves their exclusive right to extend or preclose the contest. ● Contestants age proof to be supported by date of birth certificate ● Winners will be selected by draw among correct entries. ● Winners will be notified individually ● No cash compensation is allowed in place of prize articles ● Warranty of prize articles are subject to the respective manufacturer ● You can send only one entry per month ● You can participate in any or all of the 6 contests ● No correspondence other than entry forms will be accepted ● Your signing the coupon will mean that you agree to the rules and regulations of the contest given on the coupon ● Entries reaching us after the last date mentioned will be disqualified ● If there are no all correct entries in any event, the maximum number of correct answers will be considered and the entries will go into the lot ● All decisions made by the judges will be final.

CLOSING DATE : 31ST MAY 2004

Your Name : ....

Age : .... Class: .... Date of Birth : ....

Home address and PIN code : ....

....

Your signature: ....

Eclairs KOKA NAKA MAHA LACTO

India's largest selling sweets and toffees. nutrine

चन्दामामा

विशेष आकर्षण सम्पुट - १०८ मई २००४ सञ्चिका - ५

विशेष आकर्षण

अंतरंग

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20

Remittances in favour of Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail :
subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा बारह अंक ९०० रुपये
भारत में बुक पोस्ट द्वारा १२० रुपये
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड' के नाम भेजें।

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

प्रचुरता में न्यूनता का विरोधाभास

मई मास के आते ही हमारा देश पानी के लिए तरसने लगता है। भारत के अनेक भागों में मई में गर्मी पराकाष्ठा पर पहुँच जाती है जिसका आरम्भ अप्रैल में हो जाता है जो उतना गर्म नहीं होता। दक्षिण-पश्चिमी बरसाती पवन के कारण देश के दक्षिणी भागों में जून के आरम्भ में ही वर्षा होने लगती है और जुलाई तक बल्कि अगस्त में कुछ दिनों तक होती रहती है। उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में सामान्य तौर पर अधिकतम वर्षा होती है। इस बीच कुछ राज्यों को बाढ़ के प्रकोप का सामना करना पड़ता है। भारत में औसतन प्रति वर्ष २००० मि.मी. वर्षा होती है। फिर भी, देश को प्रचुरता में भी जल की दुर्लभता का सामना करना पड़ता है। यह कैसा विरोधाभास है!

जब प्रकृति हमें ऊपर आकाश से और नीचे धरती के गर्भ से इतना प्रचुर जल देती है, फिर भी, हमारे कण्ठ क्यों सूखे रहते हैं? एक तीन-सूत्रीय कार्य योजना के अन्तर्गत ***संरक्षण*** को अथवा दूसरे शब्दों में, जल के दुरुपयोग के परिहार को शामिल किया जा सकता है। दूसरा हो सकता है जल-स्रोतों का ***विकास*** जो हमारे अज्ञान अथवा बेलगाम उपेक्षा के कारण सम्भवतः अवरुद्ध हो गया हो। इसमें वर्षा-जल का जमाव (हारवेस्टिंग ऑफ रेन वाटर) भी सम्मिलित है। जिसे वर्तमान समय में अत्यधिक महत्व दिया जा रहा है। शहरी क्षेत्रों में जल के पुनरावर्तन (रि-सायकिलिंग ऑफ वाटर) का कम महत्व नहीं है। जैसे रसोई के उपयोग में लाये जल को बागवानी में उपयोग के लिए पुनरावर्तित किया जा सकता है। तीसरा कार्य हो सकता है जल का ***प्रबन्धन*** (मैनेजमेण्ट ऑफ वाटर) जिसे हमारे जीवन का अभिन्न अंग होना चाहिये। इसका काम होगा जल की उपलब्धता को सुनिश्चित करना तथा इसकी गुणवत्ता का आश्वासन देना। गुणवत्ता के बिना एक बून्द भी उपयोग में लाया नहीं जा सकता। इसके लिए आवश्यकता है आत्मानुशासन और संकल्प की।

इससे कोई इनकार नहीं कर सकता कि अब वह समय आ गया है जब एक-एक बून्द जल का महत्व है। इसलिए आज का नारा है "बढ़त में बचत" यानी अतिरिक्त हो तब भी बचाओ।

सम्पादक : *विश्वम*

చందమామ

పాఠకులకు, శ్రేయోభిలాషులకు విజ్ఞప్తి

ప్రియమైన పాఠకులకు, శ్రేయోభిలాషులకు,

నమస్కారం. చందమామ పత్రిక వెల పెంచకుండా, అందరికీ అందుబాటులో వుండేలా చేయడానికి మేము ఎల్లప్పుడూ ప్రయత్నిస్తున్నాము. ఇక తప్పదనుకున్నప్పుడు మాత్రమే మా సమస్యను పాఠకులకూ, శ్రేయోభిలాషులకూ తెలియజేస్తూ వచ్చాము.

ఇటీవల కొన్ని సంవత్సరాలుగా పత్రికా ప్రచురణకు సంబంధించిన వస్తువుల ధరలు విపరీతంగా పెరిగిపోయాయి. వాటన్నిటినీ భరించాము. కాని హఠాత్తుగా పెరిగిన న్యూస్ ప్రింట్ కాగితం ధర కారణంగా పత్రిక వెల పెంచడం ఇప్పుడు తప్పనిసరి అయింది. జూలై 2004 నుంచి చందమామ విడిప్రతి వెల రూ. 12.00; సంవత్సర చందా 144-00 రూపాయలు.

పాఠకులూ, శ్రేయోభిలాషులూ పరిస్థితిని సహృదయంతో అర్థం చేసుకుని మాతో ఎప్పటిలాగే సహకరించగలరని ఆశిస్తున్నాము. మరిన్ని వైవిధ్యమైన అంశాలతో చందమామను మరింత ఆసక్తికరంగా, ఆకర్షణీయంగా తీర్చిదిద్దగలమని ఈ సందర్భంగా పాఠకులకు మనవి చేస్తున్నాము.

కృతజ్ఞతలతో,

బి. విశ్వనాథరెడ్డి
ప్రచురణకర్త

निर्भीक किशोर

सब १९२१ की बात है। भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन अपनी पराकाष्ठा पर था। प्रदर्शन और जुलूस हर रोज निकलते थे। बहुतों को बन्दी बनाकर जेल में डाल दिया गया था। एक दिन पुलिस ने एक जुलूस को रोका। जुलूस में एक पन्द्रह वर्षीय किशोर बालक भी वन्दे मातरम का नारा लगा रहा था। उसे भी बन्दी बना कर मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया।

"तुम्हारा नाम क्या है?" मजिस्ट्रेट ने पूछा

"आजाद", बालक ने उत्तर दिया।

"तुम्हारे पिता का नाम क्या है?" मजिस्ट्रेट ने थोड़ा तेवर चढ़ा कर पूछा। "स्वतंत्र", बालक ने निड र होकर कहा। मजिस्ट्रेट का क्रोध भड़क उठा। उसने आँखें लाल-पीली कर फिर पूछा, "तुम्हारा घर कहाँ है?" "जेल में", बालक ने तपाक से जवाब दिया।

मजिस्ट्रेट को उस पर बहुत क्रोध आया। नाबालिग होने के कारण बालक को जेल में नहीं डाला जा सकता था। इसलिए मजिस्ट्रेट ने उसे १५ बेंत मारने का दण्ड सुनाया। उसे खुले मैदान में बेंत से पीटा गया। जब भी उसे बेंत से पीटा जाता, वह दुगुने उत्साह और जोश के साथ चिल्ला कर बोलता, "वन्दे मातरम।" उस किशोर बालक की पीठ से बहते खून को देख कर दर्शकों की आँखों में आँशू उमड़ पड़े। किन्तु बालक के मुख से उफ तक न निकला।

यह असाधारण साहसी बालक भारत का लोक प्रसिद्ध स्वाधीनता सेनानी चन्द्र शेखर था जो इस घटना के पश्चात चन्द्रशेखर "आजाद" के नाम से लोकप्रिय हुआ। वह एक महान क्रान्तिकारी और कट्टर देशभक्त था। वह अन्तिम दम तक भारत माता की आजादी के लिए अंग्रेजों से टक्कर लेता रहा। सन् १९३१ में २७ फरवरी को पुलिस ने उसे इलाहाबाद के एक पार्क में घेर लिया। वह अकेला हथियार से लैस एक बड़ी पुलिस पार्टी से २० मिनट तक जूझता रहा। जब उसके माउजर में एक गोली शेष रह गई तो उसने अपनी कनपटी में गोली मार ली और इस तरह पुलिस उसे जीवित पकड़ने में नाकामयाब रही। वह निस्सन्देह आजीवन आजाद बना रहा। भारत माता ने उस दिन अपना एक महान पुत्र -रत्न खो दिया। सन् १९०६ में जन्मे चन्द्रशेखर आजाद २५ वर्ष की अल्पायु में देश के लिए शहीद हो गये।

भूसर की दवाइयों की थैली

अरावलि नामक गांव में गोविंद नामक एक गायक रहा करता था। वह गाँव के शिव मंदिर में उत्सव के दिनों में भक्ति-भरे गीत गाया करता था और भक्तों को भक्ति से भर देता था। उसके गायन को सुनकर लोग कहा करते थे, ''कितना अच्छा गाता है, इसकी कंठध्वनि कितनी सुरीली है। अगर इसे राजाश्रय प्राप्त हो जाये तो हमारे गांव का नाम चमक उठेगा।''

पर गोविंद बहुत ही विनयपूर्वक उनसे कहता, ''शिव का सेवक बना रहना चाहता हूँ। भगवान की कृपा हो भी तो मुझे राजाश्रय यहीं बैठे-बैठे कैसे मिल पायेगा? राजाश्रय के लिए प्रतिभा और प्रयास दोनों आवश्यक हैं। मुझ में न प्रतिभा है और न कभी प्रयास किया। मे हृदय का भक्ति-भाव कण्ठ से फूट पड़ता है। शिव की भक्ति में मेरा जीवन सुखपूर्वक बीत रहा है। मैं स्वयं राजाश्रय नहीं माँगूगा।''

महाशिवरात्रि का समय निकट आ गया। इस सिलसिले में हर दिन कोई न कोई कार्यक्रम होता रहता था। नौ दिनों तक ये कार्यक्रम लगातार चलते थे। इस दौरान गोविंद का परिचय भूसर से हुआ, जो बहुरूपिया बनकर लोगों का मनोरंजन करता था।

भूसर का वेष बड़ा ही विचित्र होता था। हाथ में टेढ़ी लाठी लिये कंबल ओढ़कर घूमा करता था। अपने सिर पर कौओं के पंखों की टोपी पहनता था। वह अपनी बातों से लोगों को हँसाता था और ऐसी ऊँची-ऊँची बातें करता रहता था, जिन्हें लोग समझ नहीं पाते थे। उसके मुख पर लगे हल्दी और चूने के तिलक को देखकर सब हँस पड़ते थे।

भूसर ने एक दिन गोविंद से कहा, ''तुम बहुत अच्छा गाते हो। तुम्हारी कंठध्वनि मिठास से भरी हुई है। जिस तरह से तुम्हारा गाना सुनकर

मार्कंडेय

लोग बेहद खुश होते हैं, उसी तरह से मेरा यह निराला वेष देखकर भी लोग हँस पड़ते हैं। लेकिन बहुरूपिये के इन वेषों से बढ़कर मेरे लिये मुख्य है, हमारे गाँव के नाम को रोशन करना। क्योंकर सिर्फ इसी गांव में गीत गाते हुए रह गये? कहीं और क्यों नहीं जाते और अपनी प्रतिभा प्रदर्शित नहीं करते?'' उत्सवों के अंतिम दिन उसने पूछा।

गोविंद ने कहा, ''मैं केवल भक्ति गीत ही गा सकता हूँ। इसके अलावा और मैं कोई गीत नहीं जानता। मानता हूँ कि मुझे संगीत का थोड़ा बहुत ज्ञान है, किन्तु मैंने इस दिशा में कोई ठोस प्रयत्न नहीं किया। दरबारी संगीतकार को संगीत में निष्णात होना चाहिये। उसे हर प्रकार के संगीत का न सिर्फ ज्ञान बल्कि अभ्यास भी होना चाहिये। साथ ही, एक अच्छे संगीतकार के रूप में उसका यश भी फैला हो, तभी वह राजाश्रय के लिए योग्य पात्र हो सकता है। राजा का आश्रय पाना कोई मामूली बात नहीं है। मेरे कारण इस गांव की प्रसिद्धि होनी चाहिये तो यह भगवान की कृपा और चमत्कार से ही संभव हो सकता है।''

इसपर भूसर ने हँस दिया और कहा, ''मुँह खोलकर रखने मात्र से सिंह के मुँह में जंतु नहीं आ जाते। तुमने दुर्गातीर्थ के बारे में सुना होगा। वहाँ एक महीने तक उत्सव मनाये जाते हैं। वह यहाँ से दो कोस की दूरी पर ही है। मैं आज ही वहाँ जाने के लिए निकल रहा हूँ। तुम चाहो तो दो दिनों के बाद भी वहाँ आ सकते हो। इस उत्सव में ज़मीन्दार भी भाग लेते हैं। हो सकता है, ज़मीन्दार तुम्हारा गाना सुनें और उसपर मुग्ध हो जाएँ। इससे अच्छे गायक के रूप में तुम्हारी पहचान भी हो सकती है।''

गोविंद को दुर्गा तीर्थ की याद आ गयी और उसने कहा, ''हाँ, हाँ, मैंने उस दुर्गा तीर्थ के बारे में सुना है। वह शिव के अनुचर वीरभद्र की धर्मपत्नी है। मृत लोगों की आत्माओं को शांति पहुँचाने और भूत-प्रेतों से अपनी रक्षा के लिए भक्त उस देवी की पूजा करते हैं। इसके लिए वे देवी को कोड़े समर्पित करते हैं। उस देवी के हाथ में हमेशा एक कोड़ा होता है। बहुत पहले मैं एक बार वहाँ गया था, पर गाने का मौक़ा नहीं मिला।''

''इस बार वह मौक़ा ज़रूर मिलेगा,'' कहते हुए भूसर पेटी में चमड़े की थैली रखने लगा तो

गोबिंद ने पूछा, ''वह है क्या?''

भूसर ने बड़े ही उत्साह के साथ चमड़े की थैली से कुछ दवाइयाँ बाहर निकालीं और कहा, ''यह अग्निपुंज पेट के दर्द को मिटाने, यह लेह कै को रोकने, और यह दिल की बीमारी को दूर करने के लिए है। हम तो नहीं जानते कि प्राणी कब किस रोग का शिकार हो जाए, इसलिए सफ़र में ये सब दवाइयाँ अपने पास रखता हूँ।'' फिर उन दवाइयों को उसने चपड़े की थैली में डाल दिया, पर उसे पेटी में डालना भूल गया।

इसके बाद बहुरूपिया भूसर जल्दी-जल्दी सराय से निकला और अन्य कलाकारों के साथ चलता बना।

उसके चले जाने के थोड़ी देर के बाद सराय से बाहर निकले गोबिंद को दवाइयों की वह थैली दिखायी पड़ी। भूसर को सौंपने वह गली में आया, पर उसे भूसर दिखायी नहीं पड़ा। गोबिंद ने मन ही मन सोचा कि जब दुर्गातीर्थ जाऊँगा, तब यह थैली उसके सुपुर्द कर दूँगा।

दूसरे ही दिन वह वीरभद्रपुर गया, जहाँ दुर्गा तीर्थ था और जहाँ उत्सव संपन्न होनेवाला था। जब वह वहाँ पहुँचा तो उसने देखा कि एक जगह पर हलचल मची हुई है। वहाँ ज़मींदार बड़ेही ठाट से आसन पर आसीन हैं और ठठाकर हँसते जा रहे हैं। वहाँ उपस्थित जनता भी हँस रही है। उनके बीच भूसर बंदर बनकर उछल रहा है और चिल्लाता जा रहा है, ''बाप रे, पेट दर्द, बाप रे, आँखें मुंदी जा रहीं हैं, अग्निपुंज गोली कहाँ है? दिल की बीमारी की गोलियाँ कहाँ हैं? मेरे चमड़े की थैली आख़िर हैं कहाँ? माँ दुर्गा, मुझपर कृपा करो, मेरी रक्षा करो।'' वह यों चिल्लाता जा रहा था।

भूसर ने जैसे ही चमड़े की थैली का नाम लिया, तो गोबिंद ताड़ गया कि भूसर जान-बूझकर हँसी मज़ाक नहीं कर रहा है, बल्कि सचमुच वह पेट के दर्द से पीड़ित है। वह तुरंत उसके पास गया और कहा, ''लो, यह थैली, मैं यह नहीं जानता कि कौन-सी दवाई तुम्हें देनी चाहिये, तुम्हीं निकाल लेना।'' कहते हुए उसने वह थैली उसके सुपुर्द कर दी।

तब ज़मींदार को और जनता को मालूम हो गया कि भूसर नाटक नहीं कर रहा है और वह सचमुच ही पेट के दर्द का शिकार है। भूसर ने थैली से दवा की वह गोली निकाली और मुँह में

डाली। उसने इशारे से बताया कि उसे पीने के लिए पानी चाहिये। लोगों में से एक पानी ले आया और उसे पीने के बाद वह जमीन पर बैठ गया।

असलियत जानने के बाद ज़मींदार ने भूसर से कहा, ''देखो, तुम्हारा यह बहुरूपिया वेष और तुम्हारी हास्य से भरी बातें अद्‌भुत हैं। पर मैं समझ नहीं पाया कि वेष और रोग में क्या असली है और क्या नकली है।''

भूसर तुरंत उठा और खड़े गोविंद को दिखाते हुए उसने कहा, ''प्रभु, ये अराबलि गांव के शिव मंदिर में गाते हैं। विशेषतया उत्सव के दिनों में भक्तिपूर्ण गीत गाया करते हैं। उत्तम गायक हैं। इनका नाम गोविंद है। आज ये दुर्गा मंदिर के सामने गायेंगे। मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप उनके गीत अवश्य सुनें।''

ज़मींदार ने उसकी प्रार्थना स्वीकार की। उस दिन गोविंद के गाये भक्तिपूर्ण गीतों को सुनकर ज़मींदार मंत्रमुग्ध रह गया। उसके स्वर माधुर्य पर वह रीझ गया। ज़मींदार ने उसे वहीं का वहीं आस्थान गायक के पद पर नियुक्त किया। और थोड़ी-सी ज़मीन भी उसे दान में दी। साथ ही भूसर को भी धन दिया।

भूसर के हाथ पकड़ते हुए गोविंद ने कहा, ''तुम्हारा किया गया उपकार मैं जन्म भर नहीं भूलूँगा।''

''मैंने कोई बड़ा उपकार नहीं किया। समय पर आकर तुमने मेरे प्राणों की रक्षा की। सच कहा जाए तो मैं ही तुम्हारा ऋणी हूँ। अनजाने में मैंने थैली भुला दी और समय पर आकर तुमने मेरी जान बचायी। जमींदार से तुम्हारी मुलाक़ात और तुम्हें आस्थान गायक के पद पर नियुक्त करना सब कुछ उस सर्वशक्तिमान भगवान की कृपा है। जिस भगवान में तुम्हारा अटूट विश्वास है, उसी ने तुम्हारे साथ न्याय किया। यह सब उस सर्वेश्वर की कृपा है। हम तो निमित्त मात्र हैं,'' भूसर ने कहा।

गोविन्द की आँखों में कृतज्ञता के आसूँ छलछला आये। वह मन ही मन सोच रहा था कि शिव की कृपा से असम्भव भी सम्भव हो सकता है।

दुख इसी बात का है

सब्जियों के व्यापारी गंगाधर के यहाँ एक युवक सत्यराज हाल ही में काम पर लगा। वह बड़ी ही ईमानदारी से काम करने लगा। जल्दी ही उसने मालिक की प्रशंसा पा ली।

पर सत्यराज कभी-कभी अनावश्यक ही नाराज़ हो उठता था। जब ग्राहक कुछ ज्यादा सौदेबाजी करते तो वह कह देता, ''जाइये, जाइये, आपको खरीदना नहीं आता।''

गंगाधर ने उसे बहुत समझाया कि चिढ़ने और चिल्लाने की यह आदत छोड़ दो। लेकिन सत्यराज से यह आदत नहीं छूटी। वीरभद्र उस गाँव का एक प्रमुख व्यक्ति था। एक दिन सत्यराज ने सब्जी लेने आई उसकी नौकरानी को खरी-खोटी सुनायी। वीरभद्र ने इसपर गंगाधर की खूब ख़बर ली। गंगाधर को मजबूरन सत्यराज को काम से निकाल देना पड़ा।

परेशान सत्यराज दो दिनों बाद गंगाधर के पास गिड़गिड़ाने लगा। पर गंगाधर ऊँची आवाज़ में बोला, ''सुनते नहीं, चले जाओ यहाँ से!'' सत्यराज की आँखों में आँसू आ गये। वह लौटने ही वाला था कि गंगाधर ने कहा, ''अरे सत्यराज, ज़रा इधर आ।''

सत्यराज लौटकर मालिक के सामने खड़ा हो गया। तब गंगाधर ने मीठे स्वर में उससे कहा, ''अब तुम्हारी समझ में आ गया? किसी से कड़ुवे स्वर में बात नहीं करनी चाहिए। अगर ऐसा किया, तो जानते हो, उसे अपने अपमान पर कितना दुख होता है!''

सत्यराज को अब अपनी व्यवहार-शैली पर शर्म आयी। उस दर्द को उसने अब समझ लिया। विनयपूर्वक हाथ जोड़ते हुए उसने कहा, ''मैं अब वह दर्द समझ गया हूँ, मालिक।''

''अब मैं तुम्हारा विश्वास करूँगा। अभी काम पर लग जाओ।'' गंगाधर ने कहा।

भल्लूक मांत्रिक

7

(जंगल में डाकुओं के नेता नागमल्ल ने राजा दुर्मुख को बन्दी बनाया, इस पर दुर्मुख ने अपना नाम दुर्जय गुप्त बताकर भाग जाना चाहा, पर नागमल्ल उसकी बातों पर विश्वास न करके उसे एक गुफा में ले गया। बधिक भल्लूक पहुँचकर उन्हें धमकी देने लगा, तब उग्रदण्ड नामक एक राक्षस आ पहुँचा, भल्लूक ने उस पर वार करना चाहा। उसके बाद...)

बधिक भल्लूक को परशु उठाकर अपनी ओर बढ़ते देख राक्षस उग्रदण्ड पल भर के लिए चकित रह गया, फिर किसी बात को याद करके कांप उठा। लेकिन क्षण भर बाद व ह अपने पत्थर का गदा उठाकर गरज पड़ा–''अरे कमबख़्त मानव भल्लूक! ठहर जाओ; तुम्हारी यह हिम्मत?''

बधिक भल्लूक हठात् रुक गया। फिर उग्रदण्ड की ओर देखते हुए बोला– ''अरे उग्रदण्ड! तुम राक्षस होने का घमण्ड करते हो! मेरे सामने तुम्हारा यह अहंकार चलने का नहीं! मैं देख तो रहा हूँ कि तुम्हारे पैर और हाथ कैसे कांप रहे हैं?''

उग्रदण्ड ने दांत भींचते हुए जमीन पर अपने पैरों को पटक कर कहा, ''यह मत समझो कि तुम को देखकर मैं डर रहा हूँ! बल्कि मैं तुम से घृणा करता हूँ, इस कारण क्रोध से मेरा शरीर कांप रहा है! तुम्हारा यह विकृत रूप कैसा है? आधा मानव और आधा जानवर!''

ये बातें सुन बधिक भल्लूक एक शिला पर

जोर से अपना परशु चलाकर गरज उठा, ''अरे कमबख़्त राक्षस! महान भल्लूक मांत्रिक के द्वारा निर्मित इस बधिक भल्लूक की तुम अवहेलना कर रहे हो! देखो! अभी तुम्हारा सिर कटकर नीचे गिरने जा रहा है!''यों कहकर वह राक्षस पर परशु का प्रहार करने को हुआ।

उग्रदण्ड उछलकर वार से बचते हुए निकट के एक साल वृक्ष के पास जा खड़ा हुआ। तब बधिक से बोला-''बधिक भल्लूक! तुम शांत हो जाओ! यह बात समझने की कोशिश करो कि अगर हम एक दूसरे की हत्या करने की कोशिश में घायल हो जाते हैं तो जानते हो कौन इसका फ़ायदा उठानेवाला है?''

यह सवाल सुनते ही बधिक भल्लूक को इस बात की याद आ गई कि वह उस प्रदेश में क्यों आया है? भल्लूक मांत्रिक ने उदयगिरि के राजा दुष्ट दुर्मुख का सर काटने के लिए ही उसे भेजा था! उसे तो अपना काम समाप्त कर फिर से भल्लूक मांत्रिक के पास लौटना है। ऐसी हालत में नाहक़ उसे उग्रदण्ड के साथ झगड़ा क्यों मोल लेना है?

इस विचार के आते ही बधिक भल्लूक ने अपने परशु के फाल को परखकर देखा, तब बोला- ''अरे उग्रदण्ड! तुमने वक़्त पर मेरे यहाँ आने की बात याद दिलाई। तुम पर मैं प्रसन्न हूँ। अब तुम अपने रास्ते जा सकते हो! मैं इस बगल की गुफा में छिपे राजा दुर्मुख का सर काटकर अपने आप चला जाऊँगा।'' यों कहकर बधिक वापस मुड़ गया।

तब उग्रदण्ड दो क़दम आगे बढ़कर बोला- ''अरे बधिक भल्लूक! थोड़ा रुक जाओ! तुमने अभी थोड़ी देर पहले भल्लूक मांत्रिक का नाम लिया! मैंने जिस भल्लूक मांत्रिक का नाम सुन रखा है, उसी भल्लूक मांत्रिक का नाम तो नहीं ले रहे हो! उनकी क्या उम्र होगी?''

यह बात सुनकर बधिक भल्लूक ठहाके मारकर हँस पड़ा और बोला- ''अबे जानते हो? सूर्य और चन्द्रमा की जो उम्र होगी, गुरु भल्लूक मांत्रिक की भी वही उम्र है! समझे! उनकी आँखों के सामने ही हिमालय पर्वत पैदा हुए और इतने ऊँचे हो गये! ब्रह्मपुत्र नदी के सोता बनकर इस तरह विशाल रूप को लेते हुए उन्होंने देखा है! अब बात समझ में आ गई?''

''शाबाश बधिक भल्लूक! तुम्हारे प रशु का

फाल जितना पैना है, तुम्हारी जीभ भी वैसी तेज़ है! मैं सचमुच तुम पर प्रसन्न हूँ! बताओ, मैं भी तुम्हारे साथ चलकर गुरु भल्लूक मांत्रिक के दर्शन कर लूँ तो कैसा होगा?'' उग्रदण्ड ने अपने पत्थर के गदे को दूर फेंकते हुए पूछा।

राक्षस के इस व्यवहार पर बधिक भल्लूक चकित होकर बोला- ''सुनो, तुमने पत्थर के गदे को दूर फेंक दिया। इसके पीछे कोई रहस्य तो नहीं है?''

''क्यों नहीं? इस पल से हम दोनों दोस्त हैं!'' उग्रदण्ड ने उत्तर दिया।

यह उत्तर सुनकर बधिक भल्लूक खिलखिलाकर हँस पड़ा और बोला- ''भल्लूक मांत्रिक के हाथी के मस्तकवाले मंत्र-दण्ड के स्पर्श से मेरा पुराना रूप बदल गया है। मैं जिस क्षण राजा दुर्मुख का सिर काटकर उनके हाथ सौंप दूँगा, उसके दूसरे ही क्षण वे मुझे बधिक के रूप में बदल डालेंगे। इसलिए हम दोनों के बीच दोस्ती नामुमकिन है! तुम अपनी गुफा में जा सकते हो!''

इसके बाद बधिक भल्लूक गुफा पर ढकी चट्टान को हटाने के प्रयत्न में लग गया, तब भीतर छिपे राजा के अंग रक्षक ने कांपते हुए लुटेरों के नेता नागमल्ल से कहा- ''नागमल्ल! इस बार महाराजा के साथ हम सब की मौत निश्चित है! अब हम क्या करें?''

नागमल्ल ने, राजा दुर्मुख की ओर प्रश्न भरी दृष्टि दौड़ाई। दुर्मुख मन ही मन गुनगुनाते गुफा के द्वार की ओर ताक रहा था। नागमल्ल तब दुर्मुख से बोला- ''सुनो, तुम्हारे अंग रक्षक की बातों से अब साफ़ मालूम हो गया कि तुम दुर्जय गुप्त नहीं हो, बल्कि राजा हो! वह बधिक भल्लूक तुम्हारा सर लेने आया हुआ है। ऐसी हालत में तुम आत्मरक्षा का प्रयत्न न करके गुनगुनाते क्या हो?''

''मैं गुनगुना नहीं रहा हूँ! आगे का प्रयत्न जानने के लिए अपने आराध्य की प्रार्थना कर रहा हूँ।'' दुर्मुख भर्राई आवाज में बोला।

''तो इसका मतलब यह हुआ कि आज तक तुमने जो कुछ किया, अपने आराध्य देव की अनुमति से ही किया है? छी! बाहर चले जाओ!'' ये शब्द कहते नागमल्ल ने दुर्मुख को अलग हटाया, अध खुली गुफा के द्वार के निकट जाकर ऊँची आवाज़ में बोला- ''अजी बधिक भल्लूक! सुनो,

तुम वास्तव में इस गुफा में छिपे लोगों में से अपने को दुर्जय गुप्त बताकर झूठ बोलनेवाले राजा दुर्मुख को ही चाहते हो न?''

''हाँ-हाँ!'' बाक़ी लोगों से मेरा कोई मतलब नहीं है। उसे गुफा से बाहर ढकेल दो! मैं सिर्फ़ उसका सर काटकर ले जाऊँगा!'' बधिक भल्लूक ने समझाया।

ये शब्द सुनने पर राजा दुर्मुख का चेहरा पीला पड़ गया। वह अपनी बगल में स्थित अंग रक्षक से बोला- ''अरे अंगरक्षक ! तुम्हें अपनी स्वामिभक्ति का परिचय देकर स्वर्ग पाने का यही एक अच्छा मौक़ा है! तुम आगे बढ़कर बधिक भल्लूक का सामना करो! मैं इस बीच देखूँगा कि अपने प्राणों के साथ बचकर भागने का शायद कोई उपाय निकल जाये!''

इस बीच बधिक भल्लूक ने बाहर से क्रोध के मारे दांत किटकिटाते पूछा- ''अरे, वह दुष्ट दुर्मुख राजा कहाँ पर है? मैं अगर गुफा में घुस पड़ा तो तुम सब के सिर काट डालूँगा।''

डाकू नागमल्ल ने अपने दोनों अनुचरों को आँख का इशारा किया, जब वे उसके पीछे चले आये, तब गुफा द्वार पर स्थित चट्टान को हटाकर बाहर सिर रखा और बोला - ''महाशय! मुझे और मेरे दो अनुचरों को प्राणों के साथ छोड़ दो। हम लोग इस प्रदेश में जंगल के खूंख्वार जानवरों के बीच जान हथेली पर ले जीनेवाले हैं।''

''अबे, तुम लोग चोर हो! यह बात मैं जानता हूँ। फिर भी मैं तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ूँगा। तुम लोग बाहर आ जाओ।'' बधिक भल्लूक ने कहा।

इसके बाद नागमल्ल और उसके अनुचर पूर्ण रूप से चट्टान को हटाकर बाहर आ गये। उनकी आड़ में छिपकर राजा दुर्मुख तेजी के साथ बाहर आया और भागने को हुआ।

इस पर बधिक भल्लूक उछलकर कूद पड़ा और चिल्ला उठा - ''अरे दुर्मुख! रुक जाओ!'' यों कहते बधिक उसका पीछा करने लगा। राजा पत्थर का गदा लिये खड़े हुए राक्षस उग्रदण्ड को देख चीख़ उठा और उसके चरणों में गिर पड़ा।

बधिक भल्लूक खुशी में आकर बोला- ''अरे दुष्ट दुर्मुख! तुम मेरे हाथों में आ गये।'' यों कहते वह राजा दुर्मुख के समीप पहुँचा ही था, कि उग्रदण्ड ने हाथ उठाकर उसे रोकते हुए पूछा-''भाई!

बधिक भल्लूक! यह बताओ, गुरु भल्लूक मांत्रिक ने तुम्हें जिन्दा राजा के सर को काटकर लाने का आदेश दिया है या मृत दुर्मुख राजा कर सर?''

यह सवाल सुनकर बधिक भल्लूक अचरज में आ गया और निश्चल गिरे दुर्मुख की ओर परखते हुए देख पूछा-''उग्रदण्ड! क्या तुम समझते हो कि यह दुर्मुख मर गया है?''

''यह तो मरा नहीं, बेहोश हो गया है! बुजुर्गों ने बताया है कि जो बेहोश है, उसका सर काटना महान पाप है। तुम एक काम करो! इसे गुरु भल्लूक मांत्रिक के पास ले जाकर वहीं पर इसका सर काट डालो। वहाँ पर पहुँचते-पहुँचते यह ज़रूर होश में आ जाएगा!'' उग्रदण्ड ने समझाया।

बधिक भल्लूक गहरी साँस लेकर बोला-''छी छी! तुम बताते हो कि मैं अपने दुश्मन को कंधे पर उठाकर ले जाऊँ?''

उग्रदण्ड ने एक बार गुफा की ओर नज़र डाली। वहाँ पर नागमल्ल और उसकेदो अनुचर खड़े हो भागने की कोशिश में कोई कानाफूसी कर रहे थे। इस पर उग्रदण्ड ने पत्थर के गदे को हाथ में लेकर ललकारा - ''अरे, राहगीरों को लूटनेवाले कमबख़्त डाकुओ! तुम लोग भाग जाने की बात सोच रहे हो? खबरदार! मैं तुम लोगों को अपने पैरों के नीचे रौंद डालूँगा। यहाँ पर आ जाओ! सुनो, वह अंग रक्षक कहाँ पर है?''

ये बातें सुन तीनों डाकू थर -थर कांप उठे। नागमल्ल ने गुफा के भीतर झांककर देखा, तब बोला-''महाशय! ऐसा लगता है कि राजा दुर्मुख का अंग रक्षक भी बेहोश हो गया है। वह गुफा से सट कर लुढ़क पड़ा है।''

''वह तो बेहोशी का स्वांग रच रहा है। उससे कह दो कि उग्रदण्ड उसे अभय दान दे रहे हैं!'' उग्रदण्ड ने आदेश दिया।

इस पर लुटेरों के नेता नागमल्ल ने जोर से चिल्लाकर कहा-''अरे अंग रक्षक! होश में आ जाओ! महा राक्षस उग्रदण्ड ने तुम को प्राणों के साथ बचाने का अभय दान दे दिया है।''

ये शब्द सुन अंग रक्षक झट से उठ बैठा। घुटनों पर रेंगते गुफा से बाहर आया और कांपते स्वर में पूछा- ''क्या महाराजा दुर्मुख का सर कट गया है? बधिक भल्लूक यहाँ से चला गया है?''

इसके दूसरे ही क्षण नागमल्ल के अनुचरों ने उसकी ओर लपककर अंग रक्षक की गर्दन पकड़

ली और उसकी कमर पकड़कर गुफा के बाहर खींच डाला, तब कहा - "तुम बकवास बंद करो! लो, देखो! तुम्हारा राजा दुर्मुख उग्रदण्ड के चरणों पर बेहोश पड़ा है!"

अंग रक्षक आपाद मस्तक कांप उठा। उग्रदण्ड के आगे जाकर बोला- "महाराक्षस! मैं इस क्षण से आप ही का अंग रक्षक हूँ। आप मुझे इस बधिक भल्लूक से बचा लीजिये!"

उग्रदण्ड विकट अट्टहास करके बोला- "अब तो मेरे प्राणों की रक्षा करने के लिए एक अंग रक्षक निकल आया है। ओह! एक महा राक्षस की कैसी दुर्गति हो गई है !"

फिर धीरे से बोला, "अरे रक्षक! तुम सामनेवाली उस गुफा में जाकर एक शिला पात्र ले ले और उन पेड़ों के पीछेवाले तालाब में से पानी ला आओ! इस बीच हम कोशिश करके देखेंगे कि दुर्मुख को होश में लाने का शायद और कोई उपाय हो!"

अंग रक्षक ने विस्मय में आकर पूछा- "ओह! हमारे राजा के होश में आने पर ही बधिक भल्लूक उनका सर काटकर ले जाना चाहते हैं।" इस पर बधिक भल्लूक ने आँखें लाल करके परशु उठाकर पूछा, "अरे मूर्ख! क्या भूल गये, महा राक्षस उग्रदण्ड ने तुम्हें क्या आदेश दिया है?"
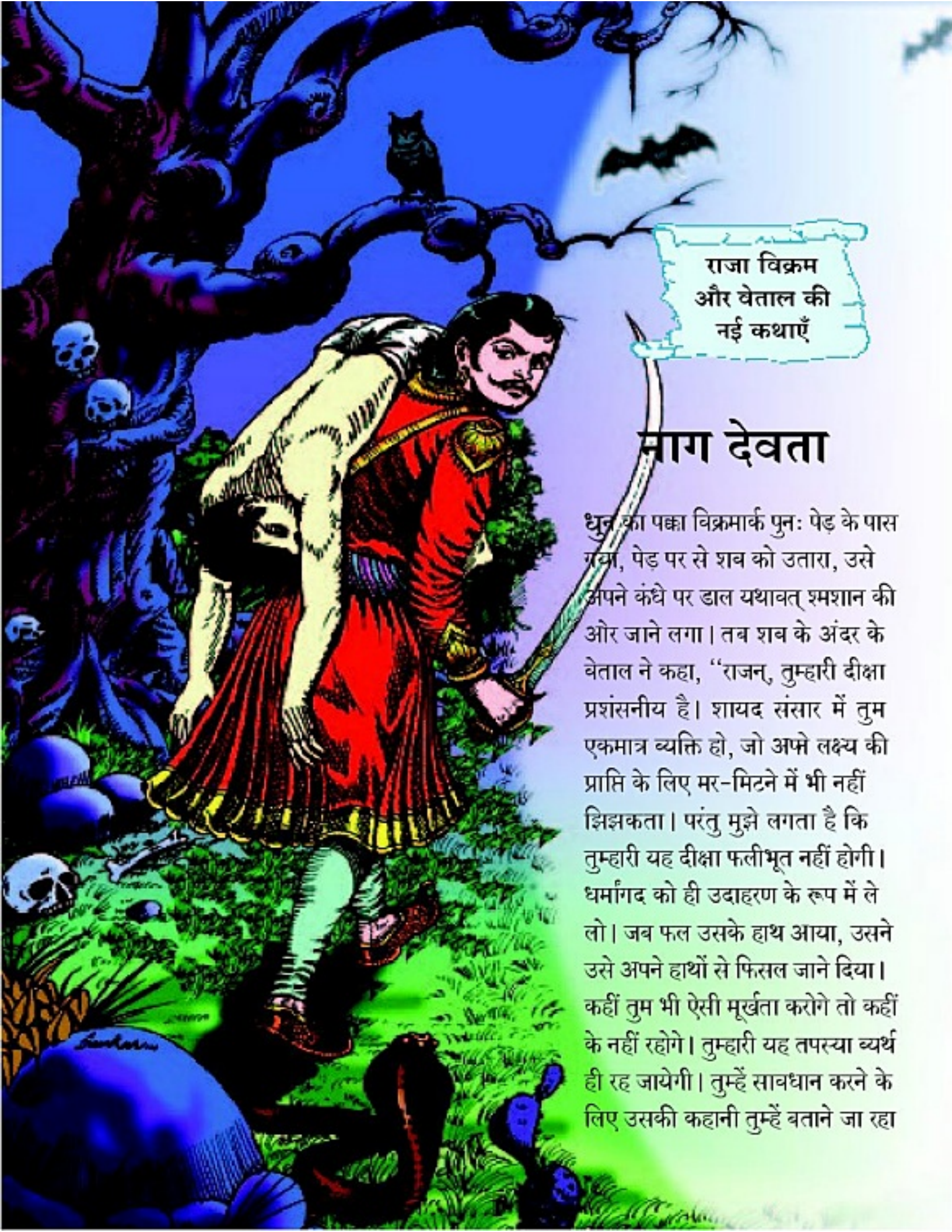
इसके बाद तुरंत अंग रक्षक राक्षस की गुफा में दौड़ पड़ा, वहाँ से एक पत्थर का पात्र लेकर पानी भर ही रहा था कि पेड़ों के समूह में खड़ा सूंड कटा हाथी उसे देख चिंघाड़ उठा और उसकी ओर तेजी के साथ दौड़ पड़ा।

इस पर अंग रक्षक पात्र को वहीं पर छोड़कर चीखते - चिल्लाते उग्रदण्ड के निकट दौड़ते आ पहुँचा, तब बोला, "महाशय ! बधिक भल्लूक साहब का सूंड कटा हाथी मेरा पीछा करते इसी ओर दौड़ा चला आ रहा है! मुझे बचाइये !"

"ओह! तब तो मेरा वाहन इसी प्रदेश में है!" यों कहते बधिक भल्लूक ने सिर घुमाकर उस दिशा में देखा, तभी हाथी अपनी सूंड ऊपर उठाकर. चिंघाड़ते भयंकर भूत की भांति उन पर हमला करने को हुआ। *(और है)*

राजा विक्रम और वेताल की नई कथाएँ

नाग देवता

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया, पेड़ पर से शव को उतारा, उसे अपने कंधे पर डाल यथावत् श्मशान की ओर जाने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, "राजन्, तुम्हारी दीक्षा प्रशंसनीय है। शायद संसार में तुम एकमात्र व्यक्ति हो, जो अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मर-मिटने में भी नहीं झिझकता। परंतु मुझे लगता है कि तुम्हारी यह दीक्षा फलीभूत नहीं होगी। धर्मांगद को ही उदाहरण के रूप में ले लो। जब फल उसके हाथ आया, उसने उसे अपने हाथों से फिसल जाने दिया। कहीं तुम भी ऐसी मूर्खता करोगे तो कहीं के नहीं रहोगे। तुम्हारी यह तपस्या व्यर्थ ही रह जायेगी। तुम्हें सावधान करने के लिए उसकी कहानी तुम्हें बताने जा रहा
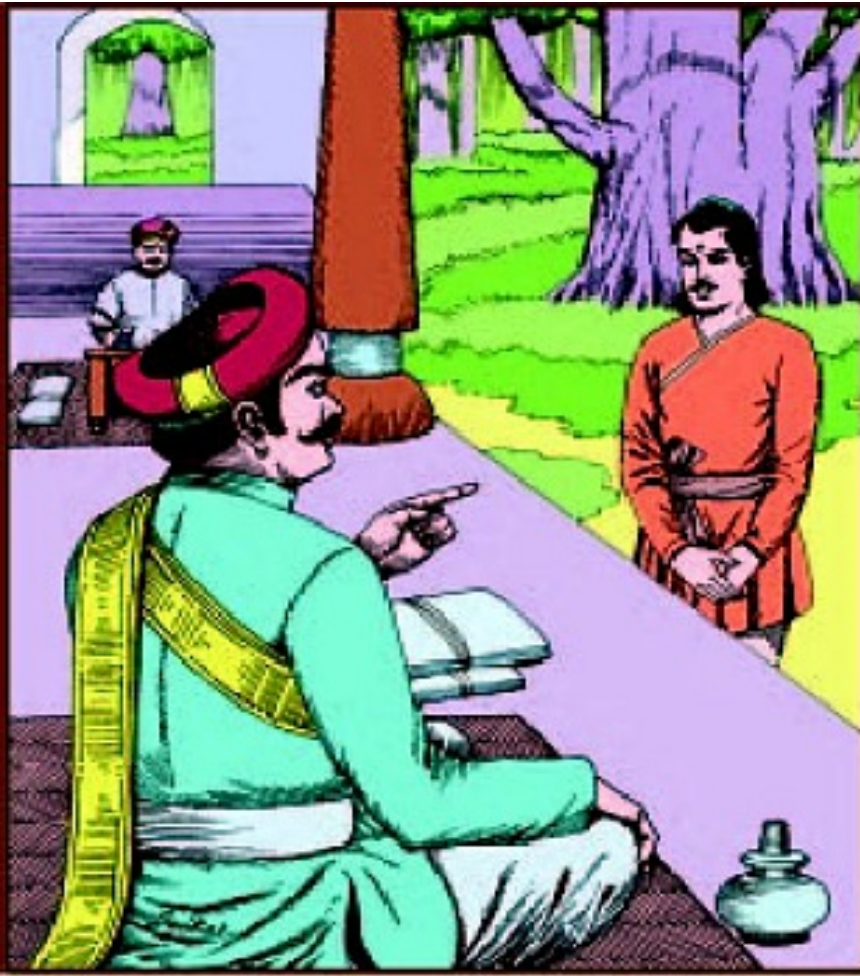
हूँ। ध्यान से सुनो।'' फिर वेताल धर्मांगद की कहानी यों सुनाने लगा:

धर्मांगद और विश्वनाथ दीर्घकाल से घने दोस्त थे। पर उनकी मैत्री की परीक्षा भूषण के रूप में हुई।

भूषण धोखेबाज़ था। धोखे से भरे पत्रों की सृष्टि करने में वह पटु था।उसने ऐसे एक पत्र की सृष्टि की, जिसमें लिखा गया कि धर्मांगद ने अपने खेत उसके पास गिरवी रखकर उससे तीन हज़ार अशर्फियाँ कर्ज में लीं। फिर उसने धर्मांगद को ख़बर भिजवायी कि तुरंत उसका कर्ज चुकाया न जाए तो उसका खेत वह अपने अधीन कर लेगा।

धर्मांगद तुरंत न्यायाधिकारी से मिला और उसने भूषण के धोखे से उसे बचाने की विनती की। न्यायाधिकारी ने इसपर खूब सोचने के बाद कहा, ''किसी भी अपराध की जांच-पड़ताल किये बिना निर्णय लेना उचित नहीं है। मैं भली-भांति जानता हूँ कि तुम अच्छे स्वभाव के हो और भूषण धोखेबाज़ है। पर जांच-पड़ताल तक भूषण को रोकना हो तोतुम्हें एक हज़ार अशर्फियाँ जमानत के रूप में रखनी होंगी। साथ ही किसी को तुम्हारी जमानत देनी होगी।''

तब धर्मांगद के पास धन नहीं था। फिर भी वह नहीं घबराया। गाँव भर में उसका अच्छा नाम था, इसलिए उसे लगा कि अवश्य ही कोई न कोई कर्ज़ देगा। पर लोगों को जब मालूम हुआ कि उसका खेत उसके हाथों से शायद छूटनेवाला है तो कोई भी कर्ज़ देने आगे नहीं आया।

धर्मांगद को विश्वास था कि ऐसी परिस्थिति में विश्वनाथ अवश्य ही उसकी सहायता करेगा। पर, उसी वक्त विश्वनाथ का पिता बहुत बड़ी बीमारी का शिकार हो गया। इसी बीच उसकी बहन की शादी भी तय हो गई। विश्वनाथ ने अंदाजा लगाया कि आवश्यक खर्च के लिए कम से कम पाँच-छे हज़ार अशर्फ़ियों की ज़रूरत पड़ेगी।

वह इन्हीं कोशिशों में लगा हुआ था। ऐसे समय पर भूषण उससे मिला और बोला, ''मैं तुम्हारी मदद करने को तैयार हूँ। पर तुम्हें भी मेरी मदद करनी होगी।''

विश्वनाथ को लगा कि अब दोस्ती से बढ़कर है, ज़रूरत। उसने धर्मांगद के विषय में ज़मानत देने से साफ़-साफ़ इनकार कर दिया। धर्मांगद

को कहीं भी कर्ज़ नहीं मिला। फलस्वरूप खेत भूषण का अपना हो गया।

तब धर्मांगद, भूषण से भी अधिक विश्वनाथ पर क्रोधित हुआ। पहले उसने सोचा कि विश्वासघाती विश्वनाथ को मार डालें। परन्तु सोचने पर उसे लगा कि भला इससे क्या फ़ायदा होगा। उसे हत्यारा ठहराकर फांसी की सज़ा सुना दी जायेगी। यदि वह अपना प्रतिकार लेने के लिए उसे जीभर पीटेगा, उसके हाथ-पाँव तोड़ेगा तब भी तो लोग यह कहकर उससे घृणा करेंगे कि वह दुष्ट है, नीच है।

धर्मांगद की समझ में नहीं आया कि विश्वनाथ से कैसे बदला लिया जाए। इसलिए गाँव के बाहर की एक गुफ़ा में रहनेवाले एक बैरागी से वह मिला और अपना दुखड़ा सुनाया। सब लोग कहते थे कि वह चमत्कार करने की शक्ति रखता है।

बैरागी ने, धर्मांगद का दुखड़ा सुना और फिर कहा, ''स्वार्थ के बश में आकर विश्वनाथ ने समय पर तुम्हारी मदद नहीं की, इसलिए वह तुम्हारा सच्चा दोस्त नहीं है। चूँकि उसने तुम्हारी मदद नहीं की, इसलिए तुम उसे हानि पहुँचाना चाहते हो। इसलिए तुम भी अच्छे दोस्त नहींहो।''

''स्वामी, अपकार किया है विश्वनाथ ने, मैं उसे हानि पहुँचाना नहीं चाहता। बस, बदला लेना चाहता हूँ। इसके लिए मुझे आपकी सहायता चाहिये,'' धर्मांगद ने कहा।

''अब तुम्हारे मन में प्रतिकार की भावना भरी हुई है। साँप के विष की ही तरह प्रतिकार भी मनुष्य के लिए विषैलाहै। मैं विषैले प्राणियों की मदद नहीं करता। तुम प्रतिकार की भावना छोड़कर आओगे तो फिर बातें करेंगे।'' बैरागी ने स्पष्ट कह दिया।
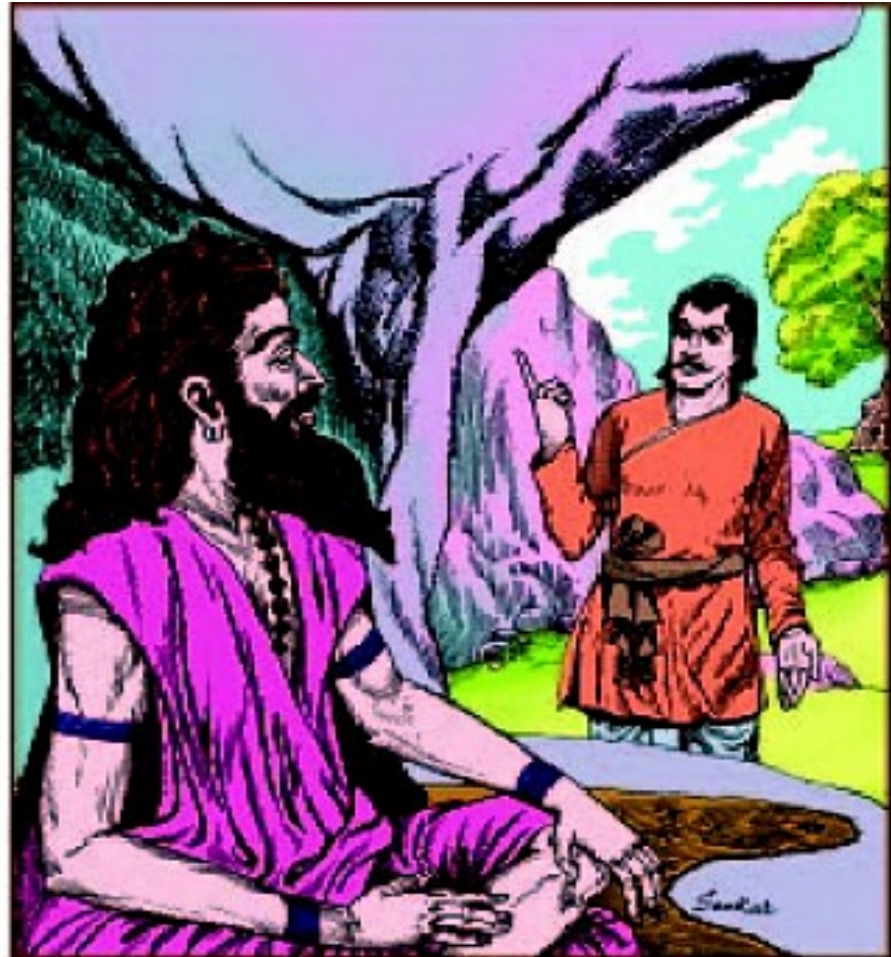
''स्वामी, मेरे मन से प्रतिकारकी यह भावना हट जाए, इसके लिए भी आप ही कोई मार्ग सुझाइये। इस प्रतिकार का उद्वेग मुझसे सहा नहीं जा रहा है।'' धर्मांगद ने कहा।

बैरागी ने कहा, ''तो सुनो! मैं तुम्हें सर्प के रूप में बदल सकता हूँ। तब तुम्हारा प्रतिकार विष के रूप में परिवर्तित हो जायेगा और तुम्हारे मस्तिष्क में प्रवेश करेगा। जब तुम उस विष के प्रभाव से बाहर आ जाओगे, तब फिर से मानव बन सकोगे। जब तक तुम सांप बने रहोगे तब

तक तुममें पूर्व ज्ञान रहेगा,पर बुद्धि तो सांप ही की होगी। परंतु हाँ, जब तुम्हें उस रूप में रहते समय कोई मार डालेगा तो उसी रूप में मर जाओगे।'' धर्मांगद ने अपनी सहमति दे दी। बैरागी ने उसे सांप बना दिया।

सांप के रूप में परिवर्तित धर्मांगद, वहाँ से रेंगता हुआ खेतों की ओर बढ़ता गया। उस समय एक किसान खेत में खड़ा होकर लाठी से मिट्टी हटा रहा था। वह लाठी सांप की पूँछ से जा लगी।

साँप नाराज़ हो उठा और फन फैलाकर फुफकारने लगा। तब तक किसान वहाँ से जा चुका था। फुफकार सुनकर बगल की झाड़ियों में से एक सांप बाहर आया और धर्मांगद से कहने लगा, ''मुझे इस बात का डर हुआ कि तुम उस आदमी का पीछा करोगे और डँस दोगे। याद रखना, आदमी हमें देखेगा तो हम ख़तरे में पड़ जायेंगे।'' सांप - धर्मांगद ने उस सांप से अनेक विशेष बातें जानीं। उसकी बातों से उसे मालूम हुआ कि सिर में जो बिष भरा हुआ होता है, उसका उपयोग सांप आत्म-रक्षा मात्र के लिए करते हैं। मानव के द्वारा जो भी हानि पहुँचायी जाती है, उससे अगर प्राण ख़तरे में नहीं पड़ता हो तो वे उस मानव को कोई हानि नहीं पहुँचाते। सांपों में प्रतिकार की भावना नहीं होती।

धर्मांगद को भी यही सच व सही लगा। फिर भी वह सोचता रहा कि विश्वनाथ उसका दुश्मन है और उसे डँसना चाहिये। तब वह मर जायेगा और मुझे इसके लिए कोई दंड नहीं दिया जायेगा।

धर्मांगद यों सोचकर, सबकी नज़रों से बचते हुए विश्वनाथ के घर पहुँचा। घर के एक कमरे में छे साल की उम्र का विश्वनाथ का बेटा गुड़ियों से खेल रहा था। उसने सांप-धर्मांगद को देख लिया और डर के मारे ''सांप सांप'' कहकर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा।

धर्मांगद के मन में विचार आया कि उस बालक को डँस लूँ और विश्वनाथ को पुत्रशोक का शिकार बना दूँ। पर उसे लगा कि उस मासूम बच्चे को डँसना पाप है। वह वहाँ से तेजी से रेंगता हुआ पूजा मंदिर में गया।

इतने में घर के सब लोग विश्वनाथ के बेटे के पास पहुँच गये। उसकी बात सुनकर सबके सब पूजा मंदिर में आये। उन्होंने देखा कि सांप-धर्मांगद फन फैलाकर वहाँ खड़ा है।

''नाग देवता है। आंखें बंद करके नमस्कार करो। किसी को भी वह हानि नहीं पहुँचायेगा। आज से हमारी सब तक़लीफें दूर हो जायेंगी, प्रार्थना करो कि दुष्टों की वजह से तुम्हारे मित्र धर्मांगद पर जो विपदा आयी, वह भी बर्फ़ की तरह गल जाए। नागदेवता हमारी प्रार्थना अवश्य सुनेंगे।'' विश्वनाथ की माँ कहने लगी। इन बातों को सुनकर सांप-धर्मांगद चौंक उठा। उसने बहुत कोशिश की, पर उसमें प्रतिशोध की भावना पैदा नहीं हुई।

''छी, इस विष से मुझे कोई लाभ नहीं पहुँचा, व्यर्थ है,'' यों सोचते हुए उसने अपने दांतों से पूजा मंदिर को जोर से काटा। इससे जैसे ही विष बाहर आ गया, सांप का रूप मिट गया और वह फिर से धर्मांगद बन गया। वे सब आंखें खोलें, इसके पहले ही धर्मांगद उनके बीच में आकर खड़ा हो गया।

विश्वनाथ ने थोड़ी देर बाद आंखें खोलीं और बग़ल में ही खड़े धर्मांगद को देखकर चकित रह गया। तब धर्मांगद ने कहा, ''दोस्त, तुम्हारी ज़रूरत ने जो काम तुमसे करवाया, उसके कारण मेरा खेत छिन गया। इतनी सी बात के लिए मैं तुम्हारी दोस्ती खोने को तैयार नहीं हूँ।''

यह सुनकर विश्वनाथ और उसके परिवार के सब सदस्यों ने उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। यह जानकर गांव के लोगों ने भी धर्मांगद को बहुत सराहा। इससे दुष्ट भूषण में भी परिवर्तन आया और उसका खेत उसे वापस कर दिया।
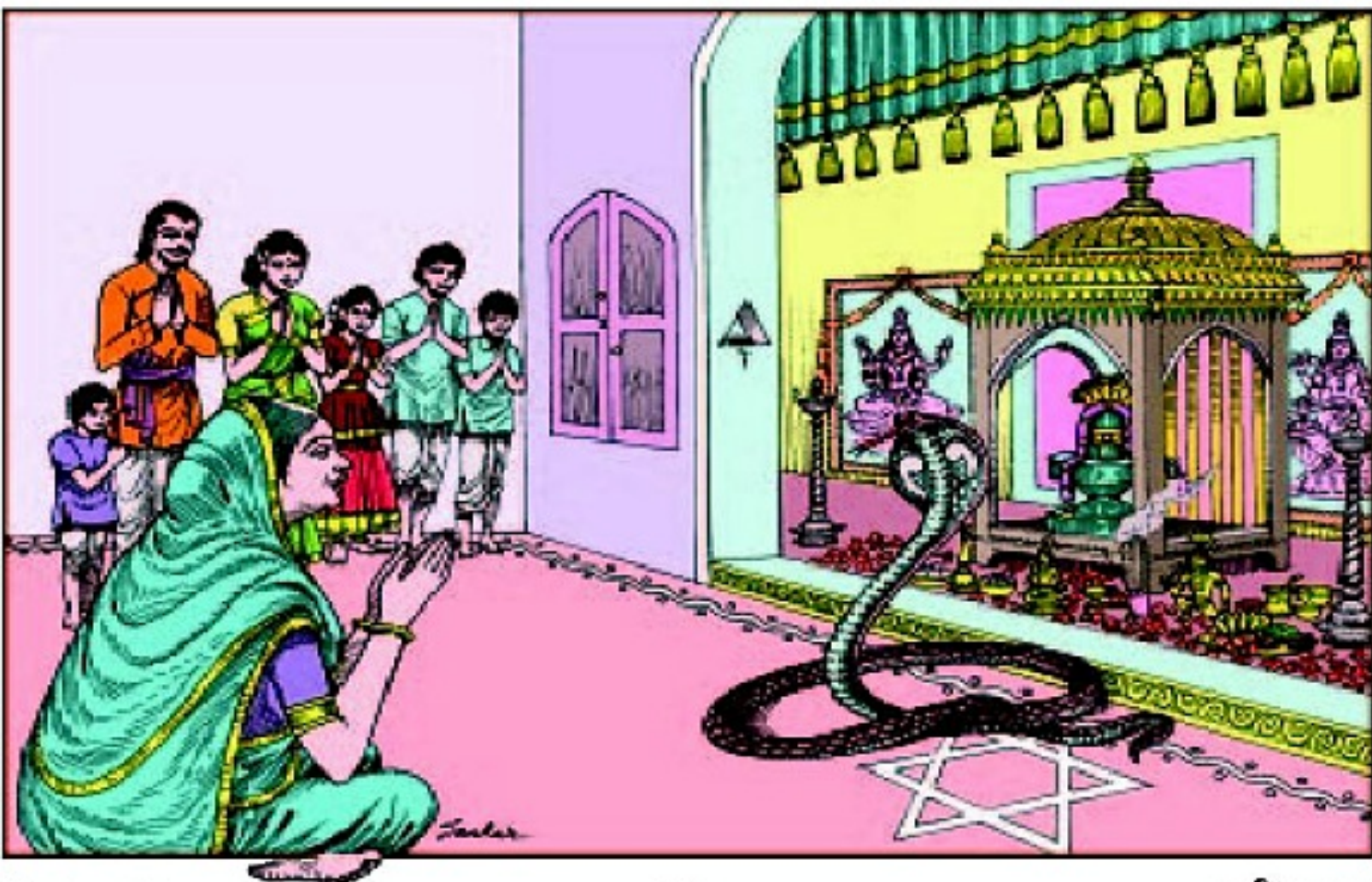
वेताल ने विक्रमार्क को कहानी सुनाने के बाद कहा, "राजन्, विश्वनाथ, धर्मांगद का जिगरी दोस्त था, पर जब वह तक़लीफों में फंस गया, उसने उसकी सहायता करने से इनकार कर दिया। ऐसे मित्रद्रोही से बदला लेने के लिए धर्मांगद ने बैरागी का आश्रय लिया और सांप बना। है न? पूजा मंदिर में, जिस दोस्ती के बारे में उसने बढ़ा-चढ़ाकर कहा और सांप बनकर उसने जो व्यवहार किया, वे मेल नहीं खाते। मेरे संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रह जाओगे, तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।"

विक्रमार्क ने कहा, "मनुष्यों की तरह ही पशु-पक्षियों में भी प्रकृति के प्रभाव के कारण एक सहज स्वभाव होता है। मनुष्यों में साधारणतया जो अनुमान होते हैं, उनके अनुसार उसने भी सोचा कि सांप दुष्ट स्वभावके होते हैं, इसीलिए वह भी बदला लेने पर आमादा हो गया। बैरागी भी उसे बता चुका था कि वह सांप होकर भी पूर्व ज्ञान नहीं खोयेगा, पर उसकी बुद्धि सांप की होगी। धर्मांगद की मुलाक़ात संयोगवश एक और सांप से हुई। उस सांप ने उसे बताया कि सांप के सिर में जो विष होता है, उसका उपयोग वह केवल आत्म-रक्षा के लिए ही करता है, वह प्रतिकार लेना नहीं जानता। उस समय, बुद्धि के विषय में, सांप बने धर्मांगद को लगा कि यह आचरणीय है। इसमें संदेह नहीं कि विश्वनाथ और धर्मांगद जिगरी दोस्त हैं। अकस्मात् कष्टों में फंसे धर्मांगद ने विश्वनाथ से सहायता मांगी और यह सहज है। पर उस समय पिता के अनारोग्य और बहन की शादी के कारण विश्वनाथ दोस्त की सहायता कर नहीं पाया। पर धर्मांगद उसकी मजबूरी को समझने में बिफल हुआ और बदला लेने का निश्चय किया। पूजा मंदिर में सांप को देखते ही विश्वनाथ की माँ ने जो बातें कहीं, उनसे उसकी आँखें खुल गयीं। वह जान गया कि सच्चाई क्या है। वह अपनी ग़लती जान गया, इसीलिए उसने विश्वनाथ को नहीं डँसा।"

राजा के मौन-भंग में सफल, वेताल शव सहित ग़ायब हो गया और पेड़ पर जा बैठा।

(आधार-सरल तेजा की रचना)

जंगल आग की लपटों में

जिस जंगल में पलास के अनेक वृक्ष होते हैं, वहाँ कुछेक महीनों में ऐसा लगता है जैसे जंगल से आग की लपटें उठ्ही हैं। यह चमकीले नारंगी रंग के फूलों के कारण होता है। रामायण के अनुसार जब राम बिन्ध्याचल से गुजर रहे थे तब उन्होंने सोचा कि आगे आग लगी हुई है। जब वे उस स्थान के निकट आये तब वे फूलों को देख कर मुग्ध हो गये। तब से उसे एक बिशिष्ट नाम से सम्बोधित किया जाता है- जंगल की ज्वाला। ये फूल मार्च के अन्त में खिलते हैं और उठती लपटों की तरह नारंगी रंग केफूलों से वहाँ का भूदृश्यदेदीप्यमान हो जाता है। पलास वृक्ष का प्रसंग वेदमें भी मिलता है।

विशालतम निवास

जोधा गढ़ में, जो अब जोधपुर के नाम से प्रसिद्ध है, मेवाड़ रजवाड़े की राजधानी थी। इसकी स्थापना सन् १८५९ में राव जोधा द्वारा की गई थी। यह नील नगर के नाम से लोकप्रिय हो गया, क्योंकि यहाँ के लगभग सभी भवन नीले रंग के हैं - यह रंग धूप को परावर्तित करता है और भवन के भीतरी भाग को शीतल बनाये रखता है। जोधपुर ने अनेक किलाओं और महलों में मध्ययुगीन स्वरूप और

परम्परा को कायम रखा है। एक इमारत - उमेद भवन को विश्व में विशालतम व्यक्तिगत निवास के रूप में प्रसिद्धि मिली है, जो २६ एकड़ भूमि पर निर्मित है और इसमें १५ उद्यान तथा ३४७ आलीशान कक्ष हैं।

भारत की पौराणिक कथाएँ-२५

राजोचित आचरण का सर्वोत्तम रूप

सुवर्णपुर का राजा सुबल देव वीर और महत्वाकांक्षी था। उसके पड़ोसी राज्य व्रतशिला से उसकी खान्दानी दुश्मनी थी। यद्यपि व्रतशिला के बर्तमान राजा से उसे कोई ख़तरा नहीं था,फिर भी यह निश्चित नहीं था कि भविष्य में शत्रु आक्रमण नहीं करेगा।

क्योंकि उसके पास एक शक्तिशाली सेना थी, उसने शत्रु पर आक्रमण कर उसे सदा के लिए खत्म कर देना चाहा।

सुबल देव की रानी को यह अच्छा नहीं लगा। ''मेरे स्वामी, जबकि अभी शान्ति बनी हुई है तब हम युद्ध क्यों करें? हमने सुना है कि व्रतशिला का राजा अस्वस्थ है। हमारे गुप्तचरों का कहना है कि अभी जिस परिस्थिति में वे हैं, वे हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। फिर जब हम मित्र बन कर रह सकते हैं, तब शत्रुता क्यों मोल लें?''

मंत्री ने रानी का समर्थन किया, ''प्रभु, यह सही है कि वहाँ के पूर्व राजा ने हमारे प्रति विश्वासघात किया था, परन्तु आज की स्थिति भिन्न है। बर्तमान राजा भद्र और शान्तिप्रिय है। युद्ध की आशंका से हम पूर्ण रूप से कभी भी आश्वस्त नहीं हो सकते, यह सच है। लेकिन व्रतशिला का राजा रुग्ण है और उसकी प्रजा उसे बहुत चाहती है। उसके पुत्र युवराज को प्रजा और भी अधिक प्यार करती है। हम उसकी सेना को हरा भी दें, तब भी व्रतशिला की प्रजा बिद्रोह कर सकती है और हमें कभी शान्ति से रहने नहीं देगी।''
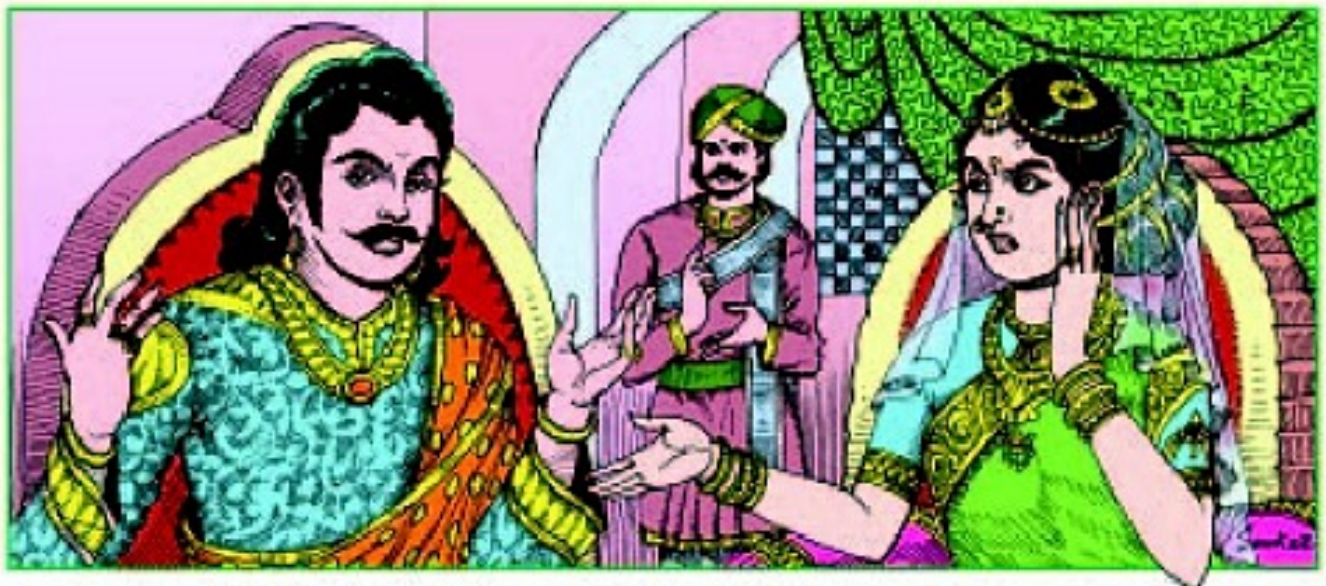
"कौन जानता है कि राजा की मृत्यु के पश्चात लोकप्रिय राजकुमार हमारे लिए संकट नहीं बनेगा। अच्छा यही होगा कि हम अभी आक्रमण कर उस राज्य को अपने राज्य में मिला लें क्योंकि अभी हम वैसा करने की परिस्थिति में हैं। यदि वे विद्रोह करेंगे तो उसे दबा दिया जायेगा। बस।" राजा सुवल देव ने कहा।

अतः सुवर्णपुर की सेना ने व्रतशिला राज्य पर आक्रमण कर दिया। सुवलदेव यह देख कर चकित रह गया कि व्रतशिला के राजा ने अस्वस्थ रहते हुए भी न केवल सेना का स्वयं नेतृत्व किया वरन सामने से, उसके ऊपर आक्रमण कर उसे घायल कर दिया। किन्तु फिर भी अपने शत्रु को मारने में सुवलदेव सफल हो गया। युद्ध में उसकी विजय हुई। व्रतशिला राज्य सुवर्णपुर राज्य में मिला लिया गया। जो भी हो, इस जीत से सुवल देव को खुशी नहीं मिली, क्योंकि उसका जख्म दिन ब दिन बिगड़ता गया और एक साल तक असह्य पीड़ा झेलने के बाद परलोक सिधार गया।

उसके सिर्फ एक बेटी थी। रानी ने किसी उदात्त चरित्र के बालक को गोद लेने का निश्चय किया। मंत्री और कुछ दरबारी राज्य में किसी योग्य युवक की तलाश में घूमने लगे।

एक सप्ताह के पश्चात मंत्री ने सोचा कि निकट के जंगल में स्थित सुविख्यात ऋषि के गुरुकुल में अध्ययन करनेवाले छात्रों पर नजर रखने में बुद्धिमानी होगी। एक दिन सूर्यास्त के समय वह अपने साथियों के साथ यात्रियों के वेश में एक शिला पर बैठ कर उपवन के निकट खेलते हुए गुरुकुल के विद्यार्थियों को देखने लगा। उनमें से एक बालक सबके प्रेम और आदर का पात्र था और गौरवान्वित भी प्रतीत होता था। जब वे खेल रहे थे तब अचानक उसके ललाट पर कहीं से एक पत्थर आकर लग गया। और खून बहने लगा। उसके कुछ साथी रस निकालने के लिए कुछ जड़ी-बूटियों की तलाश करने लगे तथा कुछ अन्य साथी पत्थर फेंकनेवाले को ढूँढने के लिए विभिन्न दिशाओं में भागे। वे उपवन के दूसरी ओर से एक व्यक्ति को पकड़ लाये और अपने नेता के सामने उसे प्रस्तुत किया।

"इसे अवश्य सजा मिलनी चाहिये।" एक ने कहा।

"निश्चय ही, चलें, हमसब इसके ललाट पर पत्थर से मारें।" दूसरे ने कहा।

लेकिन उसके नेता ने शान्त होकर पूछा, "तुमने पत्थर किसलिए फेंका?"

"मैं बहुत भूखा था। मैंने एक पेड़ की ऊँची शाखा पर एक पका हुआ अमरूद देखा। मैं इसे तोड़ना चाहता था।" उस व्यक्ति ने अपराध भाव से कहा।

"क्या तुम्हें अमरूद मिल गया?" छात्रों के नेता ने पूछा।

"हाँ, बिलकुल मिल गया। लेकिन दुःख है कि मैं इसे खा चुका।" उस व्यक्ति ने कहा।

"उम्मीद है, अब तु म्हारी भूख मिट गई होगी।" युवक ने फिर पूछा।

उस व्यक्ति ने हिचकिचाते हुए कहा, "जी, जी, हाँ, अब मैं किसी तरह जंगल पार कर गाँव तक चल सकता हूँ और वहाँ के मन्दिर में जाकर भोजन ले सकता हूँ। यदि मैं फल न खाता तो सम्भवतः अचेत हो जाता।"

"आ जाओ, हम तुम्हें आश्रम भोजनालय में खाना खिलायेंगे। अन्धेरा छाने लगा है। जंगल से होकर अब जाना खतरे से खाली नहीं है। तुम सवेरे चले जाना।" अपनी कुटिया में उस व्यक्ति को ले जाते हुए युवक ने कहा।

"यह क्या मित्र? जिसने तुम्हें चोट पहुँचाई क्या उसे तुम मदद करोगे?" उसके साथियों ने पूछा।

"मेरे मित्र, जब इसने वृक्ष को पत्थर से मारा तब वृक्ष ने इसके साथ क्या किया? क्या उसने इसे अपना फल नहीं दिया? यदि वृक्ष ऐसा कर सकता है तब वैसे ही चोट खाने पर मुझे मनुष्य होने के नाते क्या उससे अच्छा व्यवहार नहीं करना चाहिये? यदि वृक्ष ने उसे एक अमरूद दिया तब मुझे भोजन अवश्य देना चाहिये।" युवक ने उत्तर दिया।

"यह राजोचित आचरण का सर्वोत्तम रूप है। बिलक्षण! यह बालक कौन हो सकता है?" मंत्री ने, जो उनके वार्तालाप को सुन रहा था, अपने साथियों से धीरे से कहा।

चकित मंत्री अपने साथियों के साथ बालकों के पीछे-पीछे गुरुकुल में गया और उस विलक्षण बालक के बारे में जानने के लिए ऋषि से मिला। वह बालक व्रतशिला का राजकुमार था।

रानी के इच्छानुसार मंत्री व्रतशिला की रानी से मिला और फिर दोनों रानियों ने परस्पर बातचीत की। सुवर्णपुर की राजकुमारी और व्रतशिला के राजकुमार परिणय बन्धन में बन्ध गये। कहना न होगा कि राजकुमार दो सम्मिलित राज्यों का राजा बन गया और सचमुच वह एक बुद्धिमान और दयालु शासक सिद्ध हुआ।

विचित्र संयोग

लगभग आधी शताब्दी पूर्व अमरीका के नेब्रास्का में, बियेट्रिस शहर में एक खूबसूरत छोटा-सा गिरिजा घर था, जहाँ एक गायक-मंडली हर दिन संगीत का अभ्यास किया करती थी। सभी संगीतकार निश्चित समय पर अवश्य पहुँच जाते थे। लेकिन एक मार्च १९५० को कुछ अनोखा घटित हो गया।

पुरोहित वाल्टर क्लेम्पेल, रोज की तरह अपराह्न में शाम के अभ्यास के लिए सब कुछ ठीक-ठाक करने गिरजा घर गये। उन्होंने अंगीठी जलाई, क्योंकि जब ७ बजकर १५ मिनट पर संगीतकार आते थे, तब काफी ठण्ठ बढ़ जाती थी। फिर वे भोजन करने घर चले गये।

सात बजकर १० मिनट पर वे अपनी पत्नी और बेटी के साथ वापस गिरजा घर जानेवाले थे, लेकिन नहीं जा सके, क्योंकि पत्नी के वस्त्र में सिलवटें पड़ गई थीं जिन्हें इस्त्री किये बिना वे जाना नहीं चाहती थीं। इसलिए अभ्यास के लिए उन्हें देर हो गई और वे अभी घर पर ही थे कि कुछ अनहोनी हो गई।

हार्वे ऑल, जो धन्धे से यान्त्रिक था, अपनी पत्नी की अनुपस्थिति में अपने दो बच्चों की देखभाल कर रहा था। लेकिन उस दिन असामान्य रूप से अपने मित्र के साथ एक दिलचस्प वार्तालाप में उलझ गया। जब अचानक उसने घड़ी देखी तो ७.१५ हो चुका था।

पियानो वादक मेरिलिन पॉल वास्तव में उस दिन अभ्यास के लिए आधा घण्टा पहले आना चाहती थी। लेकिन शाम के भोजन के बाद उसे नींद आ गई। जब सवा सात बजे उसकी माँ ने

उसे उठाया तब हाथ मुँह धोकर समय पर पहुँचने का समय न था।

गायक बृन्द की निर्देशिका श्रीमती एफ.ई.पॉल को, जो पियानो वादक की माँ थी, इसलिए देर हो गई कि उसकी बेटी समय पर तैयार नहीं हो सकी। जब माँ और बेटी अभी घर पर ही थे कि कुछ असाधारण घटना हो गई।

शाम को बहुत ठण्ढ पड़ रही थी। स्टेनोग्राफर जॉयस ब्लैक को आलस आ गया। वह अपने छोटे से घर की गरमाहट में आखिरी मिनट तक लेटी रही। लेकिन जब वह तैयार होकर संगीत अभ्यास के लिए जाने लगी तब कुछ अप्रत्याशित घटना घट गई।

एक हाई-स्कूल छात्रा लॅडोना वंडेग्रिफ्ट ज्यामिति की एक समस्या सुलझा रही थी। उसे मालूम था कि संगीत का अभ्यास ठीक ७ बजकर १५ मिनट आरम्भ हो जाता है। वह हमेशा समय से पहले ही पहुँचने का प्रयास करती थी। लेकिन उस दिन वह ज्यामिति की समस्या सुलझाने के लिए रुक गई। सैडी और रॉयना इस्टीज समय पर तैयार हो गये। लेकिन उनकी कार स्टार्ट नहीं हुई। इसलिए उन्होंने लॅडोना वंडेग्रिफ्ट को फोन किया और लिफ्ट के लिए अनुरोध किया।

लेकिन लॅडोना ज्यामिति समस्या को सुलझाने में लगी थी। इस्टीज बहनों को इसलिए इन्तजार करना पड़ा। जब वे इन्तजार कर ही रहे थे कि उनके शहर में एक अनोखी घटना घटित हो गई।

लुसिली जोन्स तथा डोरथी वुड सहपाठिन और पड़ोसिन दोनों थीं। वे हमेशा अभ्यास के लिए एक साथ जाती थीं। लेकिन लुसिली एक रोचक रेडियो कार्यक्रम सुन रही थी जो ७ बजे से ७.३० मिनट तक चला। वह कार्यक्रम को अन्त तक सुनना चाहती थी, इसलिए उसने हमेशा तत्पर रहने और समय पर पहुँचने के अपने रेकार्ड को बर्बाद कर दिया। इसलिए डोरथी ने अपनी सहेली का इन्तजार किया और अभी वह इन्तजार कर ही रही थी कि एक आश्चर्यजनक बात हो गई।

श्रीमती लियोनार्द शुस्टॅ और उसकी छोटी बेटी संगीत के लिए समय पर पहुँच जाती। लेकिन उसे उसी शाम को अपनी वृद्धा माता को एक महत्वपूर्ण बैठक में जाने के लिए तैयार करने को जाना पड़ा। वह अपनी बेटी के साथ अभीतक चर्च नहीं पहुँच पाई थी कि कुछ भयंकर और अवांछनीय हो गया।

लेद आपरेटॅर हर्बॅट किफ़ सामान्य तौर पर संगीत अभ्यास के लिए हर रोज पहले पहुँच जाता था। लेकिन उस दिन वह एक अधूरी चिट्ठी को पूरी करने के लिए बैठ गया। वह अभी भी उसे पूरी कर ही रहा थाकि दिल दहला देनेवाली एक विचित्र घटना हो गई।

क्योंकि, उसी दिन एक मार्च १९५० को उस चर्च में, जहाँ पर शाम को ७.१५ बजे संगीत का अभ्यास होनेवाला था, ठीक दस मिनट के बाद ७.२५ मिनट पर बिस्फोट हो गया। वह एक प्रचण्ड बिस्फोट था जिससे छोटा-सा बियेट्रिस शहर दहल गया। सन्ध्या के धुंधले आकाश में आग के गोले उठने लगे। दीवारें धराशायी हो गईं और भारी लकड़ी की छतें धमाके के साथ गिर पड़ीं।

भाग्यबश गिरजा घर खाली था! गायक बृन्द का हर सदस्य, जो सभी समय की पाबन्दी के लिए प्रसिद्ध थे, उस शाम को समय पर आ न सका। वे सब के सब छोटे छोटे कारणों से विलम्बित हो गये। जैसे रेडियो कार्यक्रम, वस्त्र की सिलवटें, अधूरी चिट्ठी, ज्यामिति की समस्या, झपकी, और कार का स्टार्ट न होना। यह कैसे हो सका? क्या यह मात्र संयोग था? क्या ये सरल और सीधे-सादे कारण थे? अथवा किसी अज्ञात शक्ति के कारनामे थे? यह एक रहस्य है!

लेकिन चर्च का बिस्फोट कैसे हुआ? यह निश्चित रूप से ज्ञात नहीं है, यद्यपि बाद में अग्निशामकों ने बताया कि बिस्फोट प्राकृतिक गैस के कारण हुआ होगा जो बाहर के टूटे पाइप से लीक करके चर्च के अन्दर चला गया होगा

और अंगीठी से प्रज्वलित हो गया होगा।

बाद में, गायकवृन्द के सदस्यों ने जब उस निर्णायक सन्ध्या के अपने-अपने जीवन के घटनाक्रम पर विचार किया तब वे सब प्रभु के प्रति कृतज्ञता से भर गये; क्योंकि उन्हें पूर्ण विश्वास था कि यह सब उन्हीं का चमत्कार है जिसने उनके जीवन को बचा लिया !

क्या तुम भी ऐसा ही सोचते हो?

नागा अंजीर का वृक्ष क्यों नहीं काटते?

कोई भी नागा किसी अंजीर के पेड़ को कभी नहीं काटेगा। आज भी! क्योंकि बहुत समय पहले उन्होंने ऐसा बचन दिया था। यह कुछ इस प्रकार हुआ...।

एक बार एक युवा नागा को अपने गाँव से ऊँचे पहाड़ को पार करते हुए एक घने जंगल से जाना था। इसमें कोई संदेह न था कि वह एक बहादुर जवान नागा था किन्तु वह जंगल दुष्ट आत्माओं और नर पिशाचों से भरा था और ये सब अंधकार में घूमते थे। नागा जानता था कि ये सत्ताएँ सदा पीछे से आक्रमण करती हैं और स्वयं चाकू जैसी धारदार वस्तुओं से डरती हैं। किन्तु वह नागा यह भी जानता था कि उनमें दया नाम की कोई वस्तु नहीं। यदि वे उसे एक बार पकड़ लें तो बेहिचक और निर्दयतापूर्वक खा जाएँगे।

एक छोटे आकार के प्राणी ने अपने भयानक दांत और डरावनी आँखों से कोशिश भी की किन्तु वह उसकी तुलना में कमजोर था। युवक ने तेजी से पलट कर अपने चालू से उसकी धज्जियाँ उड़ा दीं।

लेकिन अंधेरा बढ़ता जा रहा था। उस युवक ने महसूस किया कि शायद वह पर्याप्त रूप से इतना समर्थ और भाग्यवान न साबित हो कि इन दुष्ट जीवों को नष्ट कर पाए, जो कि उसके मार्ग में आते रहेंगे। अतः उसने ऐसी जगह की तलाश शुरू की, जहाँ वह रात्रि को शरण ले सके।

वह ऊपर पर्वत के आबनूस तक गया जो अपनी शाखाओं और सफेद फूलों से लदा था। ऐसा सुन्दर वृक्ष अवश्य ही उसकी सुरक्षा के लिए अच्छा रहेगा, उसने
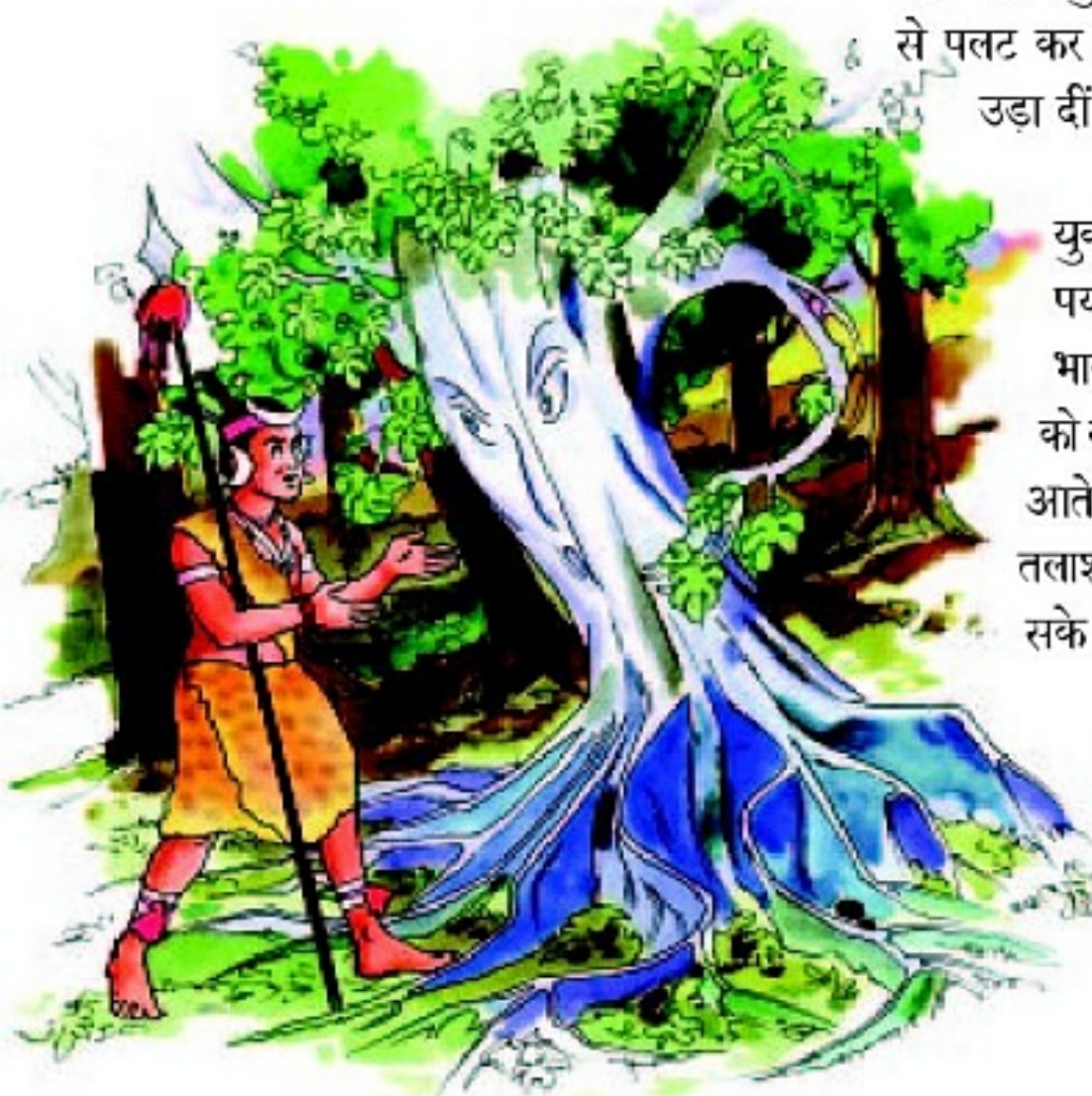
सोचा। ''कृपा कर मुझे अपनी शाखाओं में एक रात के लिए छिपा लो,'' उसने प्रार्थना की। ''यदि जल्दी ही मुझे रात्रि के लिए सुरक्षित जगह न मिली तो अंधकार के जीव आकर मुझे मार डालेंगे।''

''नहीं!,'' अपनी चमकीली पत्तियों और सफेद फूलों को हिलाते हुए पर्वतीय आबनूस ने कहा, "मैं ऐसा नहीं कर सकता, वे दुष्ट जीव मेरे फूलों को तोड़ कर मेरी पत्तियों को नोच डालेंगे जब वे तुम्हें खोजने लगेंगे, तब मैं कहाँ बचूंगा। मैं भयभीत हूँ। तुम कोई और जगह खोजो।''

अब अंधेरा घना हो चला था, वह युवक निराश होकर नागकेशर बृक्ष के पास गया। ''क्या तुम मुझे छिपाने की कृपा करोगे? रात को आने वाले दुष्ट जीव मुझे चीर कर धज्जियाँ उड़ा देंगे।'' उसने प्रार्थना की।

''मुझे अफसोस है, मैं चाहते हुए भी तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता। हम लोगों को आश्रय नहीं देते। तुम्हें और कोई स्थान ढूंढना होगा।'' पेड़ ने कहा और अपनी तलवार जैसी पत्तियाँ फड़फड़ाईं।

निकट ही अंजीर का एक विशाल वृक्ष इस परेशान युवक को एक वृक्ष सेदूसरे वृक्ष तकदौड़ते देख रहा था। युवक इतना भयभीत लग रहा था कि वृक्ष को उसके लिए दुख महसूस हुआ।''मेरे पास आओ'', उसने उदारता से कहा।

''मेरी पत्तियाँ फैल कर चौड़ी और घनी हो जाती हैं। वे तुम्हारी दुष्ट जीवों से रक्षा करेंगी। तुमने उनमें से एक को मार डाला है, अतः जब वे शैतान जीव तुम्हें खोजते यहाँ आयें तो तुम निःशब्द रहना, यहाँ तक कि सांस भी रोके रहना, एकदम निश्चल रहना और बाकी मुझ पर छोड़ दो।'' अंजीर के वृक्ष ने कहा।

अतः युवक वृक्ष की घनी शाखाओं में घुस कर उनके बीच सरक गया और भली भांति छिप गया। अब सब ठीक था, जंगल में घना अंधकार हो गया था, केवल नन्हें कीड़ें - मकोड़ों की भिन-भिनाहट सुनाई दे रही थी। कुछ ही देर में काले नन्हें दुष्ट जीव आए, जो उसी युवक को खोज रहे थे जिसने उनके एक भाई को मार डाला था।

"कहाँ है वो?'' वे गरजते हुए एक वृक्ष से दूसरे बृक्ष तक जा रहे थे।

"कहाँ है वह आदमी, जिसने हमारे भाई को मारने का साहस किया? बताओ हमें, ताकि हम उसे मार सकें।" एक बोला। "अवश्य!" दूसरा बोला। "उसे पा जाने पर हम उसके टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे। उसका एक बाल या दाँत भी साबूत नहीं बचेगा।"

वे चिल्लाते हुए धमका रहे थे, ऊपर से नीचे तक उस व्यक्ति को खोजरहे थे जिसने उनके भाई को मार डालने की हिम्मत दिखाई थी। वे इतना शोर मचा रहे थे कि किसी को कीड़ों-मकोड़ों की भिनभिनाहट या हवा की सांय-सांय भी नहीं सुनाई दे रहीथी।

"कहाँ है वह आदमी?" वे चीखे।

"हम सचमुच नहीं जानते।।" पेड़ों ने कहा। अंत में वे अंजीर के वृक्ष तक आए। अतः वह और भी नीचे इस प्रकार झुक गया मानों फलों के बोझ से दबा हो, और बोला, "मैं सचमुच नहीं जानता कि वह कहाँ चला गया। वह यहाँ नहीं है। तुम्हें उसे जंगल के अन्य हिस्सों में खोजना चाहिए।"

दुष्ट जीवों ने क्रोध में दांत किचकिचाए और चीखते चिल्लाते रहे पर वहाँ कुछ न था जिससे वे प्रतिशोध लेते। अंत में वे दूर चले गए। उनकी चीख-चिल्लाहट की आवाज धीमे -धीमे दूर होती गई। जंगल में पुनः शांति छा गई। अब फिर से वहाँ कीड़ों की आवाज सुनी जा सकती थी। जब सब कुछ सामान्य हो गया, तब नवयुवक शाखाओं के बीच से निकला और उसने अंजीर के वृक्ष को बाँहों में भर लिया।

"तुमने मेरे लिए जो कुछ किया है, मैं उसे कभी नहीं भूलूंगा।" उसने वचन दिया।

जब वह अपने गाँव में घर पहुँचा तो उसने एक-एक को बताया कि उसके साथ क्या घटा। और यह भी कि अंजीर के वृक्ष ने उस पर कितनी कृपा की।

रात्रि में उसके गाँव में सहभोज का आयोजन किया गया। उसके सुरक्षित लौटने की खुशी में आयोजित इस सहभोज के समय पूरे गाँव ने यह वचन दिया कि वे उसकी कसम का सम्मान रखेंगे।

और इसीलिए देखो, आज भी नागालोग किसी अंजीर बृक्ष को नहीं काटते, भले ही वह उनके खेत और जमीन के बीच में भी क्यों न खड़ा हो।

समाचार झलक

२४ घण्टे का निबन्ध गाँधी जी पर

राष्ट्र पिता पर काफी कुछ लिखा जा चुका है; गाँधी जी स्वयं एक बहुसर्जक लेखक थे, न केवल ''हरिजन'' समाचार पत्र में बल्कि अन्य स्थानों में भी। जब चेन्नई की ग्यारहवीं कक्षा की छात्रा ई.नन्दिनी ने महात्मा पर लगातार २४ घण्टों तक एक निबन्ध लिखने का निश्चय किया तब वह सारी सामग्री उसके बहुत काम आई।

प्रतिवेश परिपूर्ण था, क्योंकि उसने रेकार्ड बनानेवाले अपने प्रदर्शन के लिए सही व ातावरण पाने के उद्देश्य से मरीना के गाँधी मण्डपम का चुनाव किया था। उसने फरवरी महीने में एक प्रातः काल १० बजे लिखना शुरू किया और दूसरे दिन ठीक दस बजे अपना यज्ञ समापन किया। उसने सब कुछ अपनी स्मृति से लिखा और किसी पुस्तक या मुद्रित सामग्री से सहायता नहीं ली। कोई कल्पना कर सकता है कि उसने इस करतब को प्रदर्शित करने के लिए गाँधी जी के बारे में कितना ज्ञान अर्जित किया होगा।

जादू – लगातार २४ घण्टों तक

तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली में ए.एलेक्जेंडर ने २४ घण्टों तक लगातार एक मेगा जादू प्रदर्शन किया। उसका उद्देश्य था गिनिज बुक में प्रविष्टि पाना।

इसलिए लन्दन में प्रकाशकों ने इंडियन मैजिक हॉबी असोसियेशन तथा इण्टरनेशनल ब्रदरहुड ऑफ मैजिशियन्स को उस अनोखे प्रदर्शन को देखने तथा इसकी वास्तविकता को प्रमाणित करने के लिए अनुरोध किया था। दर्शकों में सरकारी उच्चाधिकारी तथा पत्रकार थे।

ज़िन्दगी का मतलब

लक्ष्मण के माँ-बाप उसके बचपन में ही गुज़र गये। इसलिए उनकी जायदाद का वह एकमात्र वारिस बना। लक्ष्मण का पालन-पोषण उसके माँ-बाप ने बड़े ही लाड़-प्यार से किया। वे हमेशा इस बात का ख्याल रखते थे कि उसे कोई कष्ट न पहुँचे। इस वजह से वह जानता नहीं था कि तक़लीफ़ क्या होती है और कमाने के लिए कितनी तक़लीफ़ें उठानी पड़ती हैं।

लक्ष्मण अच्छे स्वभाव का और अच्छे दिल का था। उसका मन इतना कोमल था कि कोई ताना कसे या उस पर व्यंग्य-बाण चलाये, तो वह बहुत चिंतित हो जाता था। वह अपने माँ-बाप को बेहद चाहता था, इसी कारण वह उनकी मृत्यु को सह नहीं पाया।

क्रमशः उसने निद्रा, आहार छोड़ दिया और उन्हीं के बारे में सोचते रहने लगा। भीतर ही भीतर कुढ़ता हुआ समय गुज़ारने लगा। उसके रिश्तेदारों और दोस्तों ने उसे समझाने की भरसक कोशिश की। वे उससे कहते रहे कि जीवन बहुत मूल्यवान है, दिवंगतों की यादों में खो जाने से कोई फ़ायदा नहीं है। उन्होंने उससे यह भी ज़ोर देकर कहा कि उनकी आत्माओं को तृप्ति पहुँचानी हो तो ज़िन्दगी में आगे बढ़ना और पारिवारिक जीवन बिताना चाहिए।

पर लक्ष्मण ने किसी की भी बात नहीं सुनी। ऐसे समय में कुछ स्वार्थी युवक स्वार्थ से प्रेरित होकर बेसिर पैर की बातें उससे कहने लगे और धीरे-धीरे उसे अपने चंगुल में फंसाने लगे। उससे अपनी ज़रूरतों के लिए बड़ी-बड़ी रक़में लेने लगे और उससे भी खर्च कराने लगे।

ऐसे समय पर, रामदास नामक एक व्यक्ति लक्ष्मण के घर आया। लक्ष्मण ने नख से शिख तक उस व्यक्ति को देखने के बाद पूछा, "आप कौन हैं? किस काम पर आये हैं?"

- प्रमीला दीक्षित -

रामदास ने उसके इस सवाल पर मुस्कुराते हुए कहा, "मैं तुम्हारा दूर का रिश्तेदार हूँ। रिश्ते में चाचा हूँ। तुम्हारी हालत देखने और जानने आया हूँ।" यह सुनते ही लक्ष्मण रोते हुए अपने माँ-बाप के बारे में बताने लगा।

"शांत हो जाओ लक्ष्मण। तुम्हारे दुख के अंत का मार्ग मैं बताऊँगा। क्या मेरी बात मानोगे?" रामदास ने पूछा।

लक्ष्मण ने आँखें पोंछते हुए कहा, "बताइये।"

"यहाँ रहोगे तो पुरानी यादें तुम्हारा पीछा करेंगी। मेरे साथ मेरे गाँव चलो। वहाँ एक बहुत बड़ा भवन बिकनेवाला है। वहाँ आराम से रह सकते हो। इन झंझटों से बहुत दूर," रामदास ने कहा।

दूसरे दिन दोनों रामनगर जाने के लिए निकल पड़े। लक्ष्मण अपने साथ बड़ी रक़म भी लेता गया, क्योंकि उसे वह भवन खरीदना था, जिसका ज़िक्र रामदास ने किया था।

जब वे रामनगर से एक कोस की दूरी पर थे, अकस्मात चार लुटेरों ने उनपर हमला कर दिया और चाकू दिखाकर उन्हें डरा-धमकाकर लक्ष्मण से धन की थैली खींच ली और भाग गये।

लक्ष्मण ज़ार-ज़ार रोने लगा और कहने लगा, "चाचा, यह क्या हो गया।" कहते हुए वह वहीं बैठ गया।

रामदास ने उसे उठाया और धैर्य बंधाते हुए कहा, "चिंतित मत होना। इन लुटेरों को पकड़ने का कोई उपाय ढूँढ़ निकालेंगे।" फिर वे दोनों लक्ष्मण के गाँव की ओर लौट पड़े।
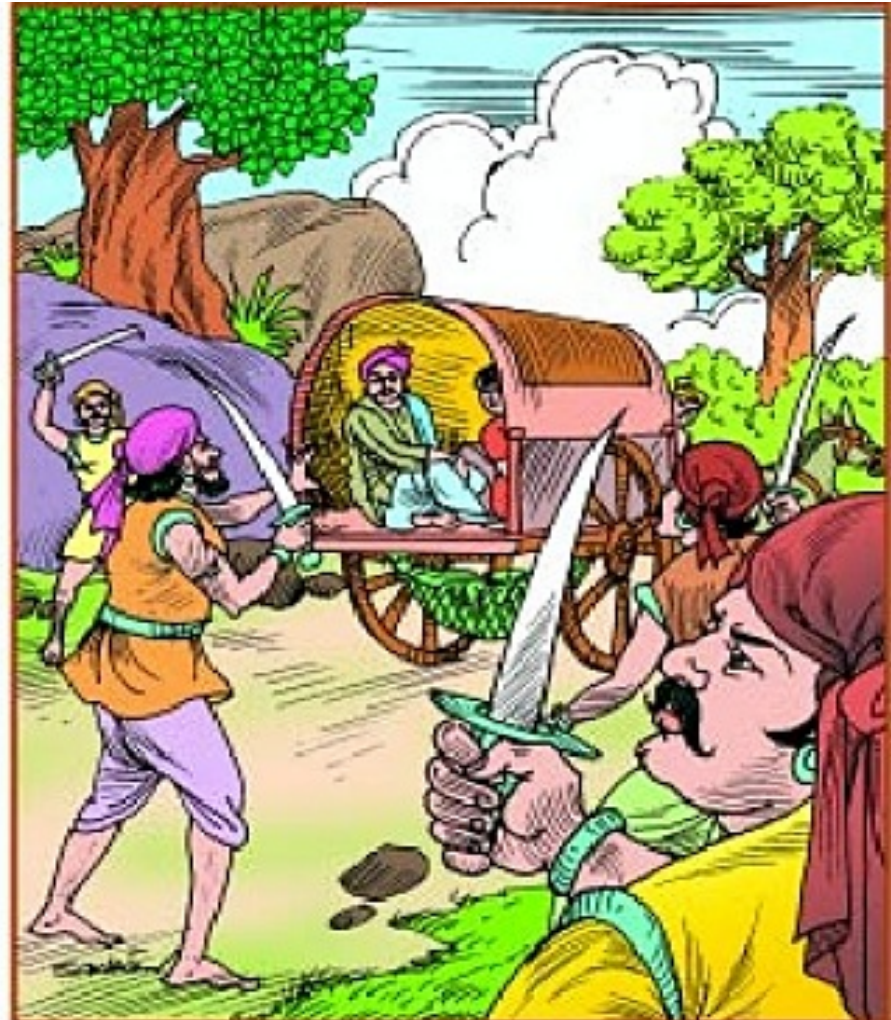
अब उसका घर ही उसकी एकमात्र जायदाद था। इस घर को बेचने का उसका इरादा नहीं था। उसे मालूम था कि घर बेच दूँगा तो रहने के लिए कोई जगह नहीं होगी! जो एकमात्र सहारा है, वह भी छिन जायेगा। अब उसका एकमात्र लक्ष्य था, ज़िन्दगी चलाने के लिए धन कमाना।

रामदास ने उसे ढाढ़स बंधाते हुए कहा, "लक्ष्मण, मैं अपना गाँव जाकर थोड़ी रक़म ले आऊँगा। उस रक़म से तुम्हारे लिए खेती के लायक भूमि खरीदूँगा। खेती करते हुए तुम अपनी ज़िन्दगी गुजार पाओगे। कुछ समय तक मैं भी यहीं तुम्हारे साथ रहूँगा और तुम्हारी मदद करता रहूँगा।"

यों कहती हुई उसने पूरा घर एक बार देख लिया और चली गयी।

साल के पूरा होने के पहले ही अच्छी फसल हुई। रामदास और लक्ष्मण अनाज से भरी बोरियाँ घर ले आये। लक्ष्मण खुशी से फूल उठा। इसे देखते हुए रामदास ने प्यार से उसकी पीठ पर थपकी देते हुए कहा, ''लक्ष्मण, जो परिवर्तन तुममें हुआ है, उसपर तुमने ध्यान दिया होगा। इधर छः महीनों से तुमने अपने माँ-बाप को भी याद नहीं किया। उन्हें लेकर तुम चिंतित नहीं रहे। बस, जो धन लुट गया, उसके और भावी जीवन को लेकर ही तुम चिंतित रहे।''

लक्ष्मण ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, ''हाँ, यह सच है।''

धन लाकर रामदास ने अपना बचन निभाया। ग्रामाधिकारी की सहायता से गाँव के बाहर का एक खेत खरीदा। लक्ष्मण के साथ-साथ रामदास ने भी उस खेत को उपजाऊ बनाने के लिए कड़ी मेहनत की। रसोई के काम में और अन्य कामों में वे दोनों एक-दूसरे की सहायता करने लगे।

एक दिन शामको जब वे दोनों रसोई के काम में निमग्न थे, तब ग्रामाधिकारी की सोलह साल की बेटी गौरी वहाँ आयी और उन्हें देखते हुए आश्चर्य-भरे स्वर में बोली, ''बाप रे, यह क्या हो रहा है? मर्द होकर रसोई का काम कर रहे हो? किसी के कहने पर मेरे पिता ने मुझे यहाँ भेजा है। कल से अपने रसोइये की बहन को आपके लिए रसोई बनाने भेजूँगी।''

रामदास ने कहा, ''इसी को ज़िन्दगी कहते हैं। मानव की सबसे बड़ी ज़रूरत है, भूख मिटाना। जब उसका पेट भरा हुआ होता है, सब तरह की सुविधाएँ उसे प्राप्त होती हैं तब व्यर्थ विचारों में खोकर अपना समय भी व्यर्थ कर देता है। इसलिए मनुष्य को सदा किसी न किसी काम में लगे रहना चाहिए। धन कमाते रहना चाहिए। अपनी स्थिति को सुधारना चाहिए और दूसरों की भी मदद करनी चाहिए। तब जाकर कोई भी दुख उसे अपने बश में नहीं कर पायेगा।''

''हाँ, आपने बिलकुल ही ठीक कहा चाचाजी।'' कहते हुए उसने दोनों हाथ जोड़कर उसे प्रणाम किया।

रामदास ने लक्ष्मण से कहा, ''ग्रामाधिकारी

तुम्हारे पिता को बहुत चाहते हैं। जिस प्रकार से मैं तुम्हारा दूर का रिश्तेदार हूँ, उसी प्रकार वे भी मेरे दूर के रिश्तेदार हैं। ग्रामाधिकारी गंगाराम ने देखा कि अपने माता-पिता की मृत्यु की वजह से तुम बहुत दुखी हो गये हो और चंद स्वार्थियों के चंगुल में फंस गये हो तो उन्होंने मुझे ख़बर भेजी और पूरा विवरण मुझे बताया। उन्होंने ही मुझे तुम्हारे उद्धार के लिए यहाँ भेजा। जिन लुटेरों ने तुम्हारा धन लूटा, वे सचमुच लुटेरे नहीं हैं। वे उन्हीं के भेजे हुए आदमी हैं। वह धन उनके पास सुरक्षित है। तुमने गंगाराम की बेटी गौरी को देखा है न। उसने हमारी मदद के लिए अपने रसोइये की बहन को ही नहीं भेजा बल्कि जब तुम घर में नहीं होते तब कभी-कभी यहाँ आकर उन पकवानों का स्वाद भी चखती है। वह जानना चाहती है कि रसोइये की बहन का बना हुआ भोजन स्वादिष्ट होता है या नहीं। वह चाहती है कि तुम्हें कोई तक़लीफ़ न हो।'' एक क्षण रुककर रामदास ने पूछा, ''उस गौरी के विषय में तुम्हारी क्या राय है?''

''सुंदर लड़की है, चुस्त है और बड़ी आसानी से दूसरों से हिल-मिल जाती है,'' लक्ष्मण ने संकोच-भरे स्वर में कहा।

इस पर ठठाकर हँसते हुए रामदास ने कहा, ''गंगाराम अपनी बेटी के बारे में तुम्हारा विचार जानने के लिए बहुत ही उत्सुक हैं। अब मालूम हो गया कि गौरी तुम्हें बहुत पसंद है। गौरी को भी तुम बहुत अच्छे लगे। यह बात मैं गंगाराम से भी कह दूँगा। उन्हें गौरी के बारे में तुम्हारी राय जान कर बड़ी खुशी होगी। अब वे जल्दी ही तुम दोनों का विवाह करा देंगे।'' यह सब सुनकर लक्ष्मण भीतर से बहुत प्रसन्न हुआ। उसे लगा कि जिन्दगी सचमुच नई-नई खुशियों और आशाओं की खोज के लिए है, चिंता में गंवाने के लिए नहीं।

इसके थोड़े दिनों के बाद लक्ष्मण और गौरी का विवाह वैभवपूर्वक संपन्न हुआ। अपना काम पूरा हो जाने के बाद रामदास अपना गाँव लौट गया। गौरी के आने से उसे मानों जिन्दगी का मतलब मिल गया।

आग्रह

रंगनाथ बारह साल की उम्र का हो गया, पर गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करते हुए भी उसकी शिक्षा अधूरी ही रही। वह पढ़ाई में अपना ध्यान केंद्रित कर नहीं पारहा था। हाल ही में हुई परीक्षाओं में भी वह उत्तीर्ण नहीं हो पाया। तभी से उसकी तक़लीफ़ों का सिलसिला शुरू हो गया।

पिता ने नालायक बताते हुए उसे गाली दी। इसके पहले तो माँ उसके लिए तरह-तरह के पकवान बनाती थी, अब समय पर खाना भी नहीं खिलाती। रंगनाथ यह देखकर दुखी हो गया।

एक दिन वह अपने घर के बाहर चबूतरे पर बैठा था। पिछले दिन अपने दोस्तों के साथ क्रिकेट खेलते समय उसे चोट आ गयीथी। उस पर मक्खी मंडराने लगी। उसे वह दूर भगाता थापर मक्खी फिर से उसी चोट पर बैठ जाती थी। इस पर वह नाराज़ हो उसे गाली देने लगा।

उस समय मुकुंद नामक एक अध्यापक उसी गली से होता हुआ जा रहा था। रंगनाथ के चिल्लाने से उसका ध्यान उसकी ओर गया। उसने रंगनाथ से पूछकर चिल्लाने की वजह जानी। पूरा विवरण जानने के बाद मुकुंद ने कहा, ''देखो रंगा, जब मक्खी जैसा छोटा जीव अपनी पसंद की चीज़ को पाने के लिए तरसता है, हठ करता है, तब सभी जीवों से बुद्धिमान व शक्तिमान मनुष्यों में कितना हठ व आग्रह होना चाहिए? सोचो तो सही।''

मुकुंद की इन बातों पर रंगनाथ सोचने लग गया। बस, उस दिन से मन लगाकर वह पढ़ने लगा। एक महीने के बाद सब प्रश्नों के उत्तर उसने आसानी से लिख डाले और प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ।

- ईश्वर

पाठकों के लिए कहानी प्रतियोगिता
सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टि के लिए २५० रु.

निम्नलिखित कहानी को पढ़ो:

विजयापुरी का राजा रात को वेश बदल कर अपने राज्य में घूमा करता था। यह देख कर उसे धक्का लगा कि बहुत लोग रास्ते की पटरी और वृक्षों के नीचे सो रहे हैं। उसने निश्चय किया कि हरेक परिवार के लिए एक घर होना आवश्यक है। एक घोषणा कर दी गई: जिन्हें घर की आवश्यकता है वे अमुक दिन महल के सामने एकत्र हों।

हजारों लोग महल के सामने एकत्र हो गये। राजा उदास हो गया, क्योंकि उसके पास सब के लिए घर बनाने का साधन नहीं था।

राजा का दुख देखकर उसके बुद्धिमान मंत्री ने एक समाधान सोचा।

अब कल्पना करो कि मंत्री ने प्रजा को क्या कहा होगा ?

- क्या उसने प्रजा को आर्थिक योगदान करने के लिए कहा?
- क्या उनसे मकान बनाने के लिए श्रमिकों के साथ मिल कर काम करने के लिए कहा गया।
- यदि अर्थ और श्रम का योगदान नहीं तो और क्या उन्होंने सलाह दी होगी?

अपनी प्रतिक्रिया १००-१५० शब्दों में लिख कर भेजो और कहानी का एक उपयुक्त शीर्षक दो। अपनी प्रविष्टि निम्नलिखित कूपन के साथ भेजो तथा लिफाफे पर "पढ़ो और प्रतिक्रिया दो" लिखना न भूलो।

अन्तिम तिथि: ३० मई २००४

नाम ------------------------------------ उम्र------------ जन्मतिथि--------------------

विद्यालय --- कक्षा-----------

घर का पता--

-- पिनकोड----------------------

अभिभावक के हस्ताक्षर   प्रतियोगी के हस्ताक्षर

चन्दामामा इंडिया लिमिटेड

८२, डिफेंस ऑफिसर्स कालोनी, इक्कातुथंगल, चेन्नई - ६०० ०९७.

छोटे सेठ का शिष्य

ब्रह्मदत्त जब काशी राज्य पर शासन कर रहे थे, उन दिनों एक बणिक परिवार में बोधिसत्व ने जन्म लिया और वे ''छोटे सेठ'' कहलाये। वे बुद्धिमान और शकुन शास्त्र के ज्ञाता थे।

एक दिन छोटे सेठ राज-दरबार में जा रहे थे, तब रास्ते में एक मरे हुए चूहे को देख बोले-''एक होशियार युवक इस मरे हुए चूहे से व्यापार करके बड़ा धनी बन सकता है और वह स्वयं अपनी शादी कर सकता है।''

उस रास्ते पर चलनेवाले एक युवक के कानों में ये बातें पड़ीं। वह एक अच्छे वंश का था, मगर गरीब था। छोटे सेठ की बात पर उसका अपार विश्वास था। इसलिए उस मरे हुए चूहे को ले जाकर किसी दूकान में बिल्ली के आहार के वास्ते एक पैसे में बेच दिया।

एक पैसे का गुड़ ख़रीद कर घड़ा भर पानी ले वह युवक जंगल के रास्ते में जा बैठा। जंगल से फूल चुनकर लानेवाले मालियों को थोड़ा-थोड़ा गुड़ और पीने के लिए पानी देकर बदले में उनसे मुट्ठी भर फूल लिये। बाद में उन फूलों को बेचकर उसने कुछ पैसे कमाये। दूसरे दिन थोड़ा और ज़्यादा गुड़ लेकर पानी के साथ वह युवक फिर उसी जगह जा बैठा। आज मालियों ने उसे फूलों के साथ फूलों के पौधे भी दिये। इस तरह उसने कुछ ही दिनों में चाँदी के आठ सिक्के कमाये।

एक दिन आँधी -वर्षा आई। राजा के बगीचे में सूखी डालियाँ और पत्ते ज़्यादा मात्रा में गिर गये। बगीचे का माली सोच रहा था कि बगीचे को कैसे साफ़ किया जाये, तब उस युवक ने वहाँ जाकर उसे समझाया कि सूखी डालियाँ और कंटीली टहनियाँ उसे दे दी जायें तो वह बगीचे को साफ़ कर देगा! इसे माली ने झट मान लिया।

इसके बाद वह युवक ऐसी जगह पहुँचा जहाँ बहुत सारे बच्चे खेल रहे थे। उन्हें गुड़ देकर बगीचे

में बुला ले गया, उनके द्वारा बगीचे में टूट कर गिरी हुई लकड़ियों तथा कंटीली टहनियों को एक जगह इकट्ठा कराया और उन्हें बगीचे के फाटक के पास पहुँचवा दिया।

उस वक़्त राजा का कुम्हार उधर से आ निकला। उसने बगीचे के पास लकड़ियों का ढेर देख मिट्टी के बर्तन पकाने के लिए सौदा किया। इस तरह उस युवक को चांदी के छब्बीस सिक्के और घलुवे में मिट्टी के कुछ बर्तन भी मिले।

तब उसके दिमाग में एक विचार आया। वह नगर के फाटक के प्याऊ के समीप पहुँचा और पांच सौ घसियारों को पानी पीने को दिया। उन लोगों ने उसकी मुँह मांगी मदद देने की बात कही। युवक ने बताया कि ज़रूरत पड़ने पर वह उन लोगों से मदद मांग लेगा।

एक बार उस युवक को एक व्यापारी के द्वारा मालूम हुआ कि दूसरे दिन उस नगर में घोड़ों का एक सौदागर अपने पांच सौ घोड़ों के साथ आनेवाला है। उसी वक़्त वह युवक उन घसियारों से मिला और बोला, ''कल तुम लोगों को मुझे घास का एक-एक गड्डर देना होगा। मेरे सारे गड्डर बिकने तक तुम लोगों को कहीं भी घास नहीं बेचना है।'' उन लोगों ने युवक की शर्त मान ली और घास के गड्डर लाकर उस युवक के घर डाल दिया।

दूसरे दिन सौदागर अपने पांच सौ घोड़ों के साथ वहाँ पर आ पहुँचा। उस दिन उसे अपने घोड़ों के लिए कहीं भी घास न मिली थी, इसलिए उस युवक के यहाँ से घास के पांच सौ गड्डर खरीद कर उसे एक हज़ार सिक्के दिये।

थोड़े दिन बीत गये। अपने परिचित एक नौका व्यापारी के द्वारा उस युवक को यह खबर मिली कि एक बहुत बड़ी नाव बंदरगाह में आ लगी है। इस पर, उसने एक बढ़िया उपाय किया। इस उपाय के अनुसार आठ सिक्के देकर एक गाड़ी को किराये पर ले लिया और बंदरगाह में पहुँचा। तब एक अंगूठी को अग्रिम के रूप में देकर नाव ख़रीदी।

इसके बाद तीन दरबानों को नियुक्त कर हुक्म दिया कि अगर कोई व्यापारी आये, तो उसे उसके पास बुला ले आये।

इस बीच नाव के बंदरगाह में लगने की ख़बर पाकर काशी के एक सौ व्यापारी माल ख़रीदने आये। पर उन्हें मालूम हुआ कि इसके पहले ही सारा माल किसी युवक ने ख़रीद लिया है। तब वे व्यापारी उस युवक के पास आये।

युवक ने उनके हाथ नाव के सारे माल के साथ वह जगह भी दो-दो हजार में बेचकर दो लाख कमाये।

इसके बाद उस युवक ने छोटे सेठ के पास जाकर उन्हें अपनी गाढ़ी कमाई के एक लाख सिक्के दिखाये।

छोटे सेठ ने प्रसन्न होकर उस युवक से पूछा- ''बेटा, तुम्हें इतना सारा धन कैसे प्राप्त हुआ?''

''महानुभाव, आपका उपदेश पाकर चार महीनों के अंदर मैंने यह सारा धन कमाया है।'' इन शब्दों के साथ उस युवक ने मरे हुए चूहे को एक पैसे में बेचने की घटना से लेकर अंत तक सारा वृतांत सुना दिया।

सारी बातें सुनकर छोटे सेठ ने सोचा-''ऐसे होशियार युवक को दूसरों के हाथ नहीं पड़ने देना चाहिए।'' उन्होंने विवाह योग्य अपनी कन्या के साथ उस युवक की शादी की और अपनी सारी संपत्ति उसके हाथ सौंप दी। छोटे सेठ के मार्गदर्शन में युवक ने अपने व्यापार को खूब बढ़ाया और देश में ही नहीं, विदेशों में भी एक बड़े व्यापारी के रूप में बहुत नाम कमाया। छोटे सेठ के मरने के बाद उस युवक को 'सेठ' की उपाधि प्राप्त हुई। वह भी छोटे सेठ के सिद्धान्तों पर चल कर एक आदर्श व्यापारी बना।
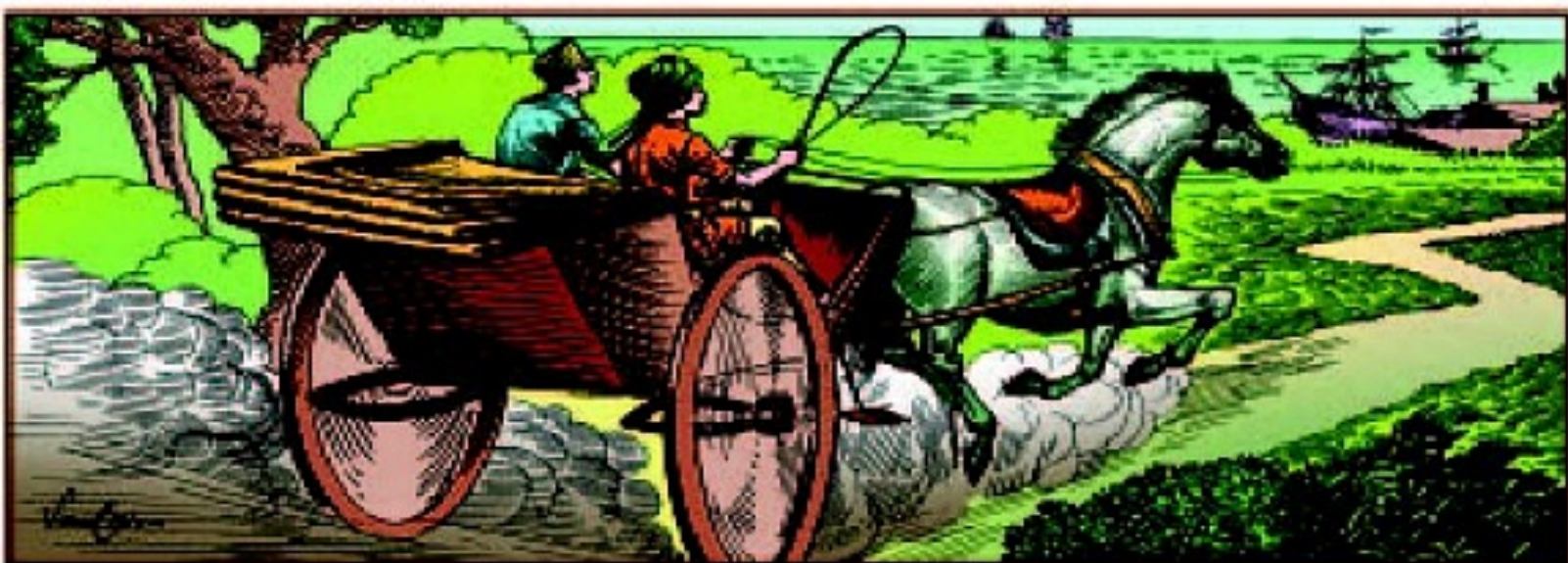
विष्णु पुराण

भगवान विष्णु ने जय और विजय से कहा - "महा मुनियों का शाप झूठा साबित नहीं हो सकता। तुम दोनों मेरे प्रति मैत्री भाव रखते हुए सात जन्मों में तर जाना चाहते हो या मेरे साथ द्वेष करते हुए शत्रु बनकर तीन जन्मों तक मेरे हाथों मृत्यु को पाकर यहाँ पर आना चाहते हो?"

इस पर जय और विजय ने तीन ही जन्मों के बाद विष्णु के सान्निध्य को पाने का बरदान माँग लिया। जय-विजय की कामना की प्रशंसा करते हुए सनकादि मुनियों ने विष्णु से कहा, "भगवान, हमने यह रहस्य अभी जान लिया कि आप की दृष्टि में राग-द्वेष दोनों बराबर हैं और जो लोग आप से द्वेष करते हैं वे आपके और निकट हो जाते हैं। आपके द्वारपालों को जल्दबाजी में हमने शाप दिया; हम अपनी करनी पर पछता रहे हैं। कृपया हमें क्षमा कीजिये।" इसके बाद वे लक्ष्मी नारायण की स्तुति करते हुए वहाँ से चले गये।

इसके बाद जय और विजय कश्यप प्रजापति की पत्नी दिति के गर्भ से हिरण्य कश्यप और हिरण्याक्ष के रूप में पैदा हुए।

वे दोनों भाई बड़े पराक्रमी बन गये। घोर तपस्या करके ब्रह्मा को प्रसन्न कर उन से वरदान प्राप्त किये और विष्णु के प्रति द्वेष करने लगे।

हिरण्य कश्यप ने राक्षसों का राजा बनकर विष्णु का सामना करने का निश्चय किया। हिरण्याक्ष ने विष्णु को कुपित करने के लिए अनेक अत्याचार किये और पृथ्वी को लुढ़काते-लुढ़काते रसातल समुद्र में ढकेल दिया। पृथ्वी रसातल समुद्र में डूब गई। भूदेवी ने विष्णु की स्मृति करके अपना उद्धार करने की प्रार्थना की।

विष्णु ने भूदेवी पर अनुग्रह करके दशावतारों में से तीसरा बराहाबतार लिया।

ब्रह्मा के होम करते समय यज्ञ कुंड से शुभ्र कांति मंडित एक कण निकल आया और बढ़ते-बढ़ते उसने जंगली सूअर का रूप धारण कर लिया। उस सूअर को विष्णु का अवतार मानकर ब्रह्मा आदि देवताओं ने यज्ञ वराह, श्वेत वराह और आदि बराह के रूप में उनकी स्तुति की।

यज्ञ वराह ने बढ़ते-बढ़ते विशाल रूप धारण कर लिया। उसके पैर बलिष्ठ थे, उसका चर्म इस्पात जैसा कठोर था, बज्र जैसे उसके जबड़े थे, उसकी आँखों से अरुण कांति आ रही थी। उसके रोएँ स्वर्ण जैसे चमक रहे थे। वह सारे विश्व को गुँजाते हुए हुँकार कर उठा। उस के माथे पर खड्ग जैसा सींग दमक रहा था।

बराहाबतार तेज गति से रसातल की ओर दौड़ पड़ा। उसकी गति से सारी दिशाएँ हिल उठीं। प्रलय कालीन आंधी चलने लगी।

यज्ञ वराह ने रसातल समुद्र के भीतर डूबी हुई पृथ्वी को अपने सींग से ऊपर उठाया।

उसी समय हिरण्याक्ष ने वरुण पर हमला करके युद्ध के लिए उसे ललकारा।

वरुण ने कहा-''तुमको तो मेरे साथ युद्ध करना नहीं है, तुम तो महान बीर हो। इसलिए तुम्हें पृथ्वी को ऊपर उठाने वाले परम शक्तिशाली यज्ञ वराह के साथ युद्ध करना होगा।'' इसपर वह तत्काल यज्ञ वराह से जूझ पड़ा।

वराह रूपधारी विष्णु के साथ हिरण्याक्ष पराक्रमपूर्वक लड़ते हुए विष्णु के गदा को उड़ा कर ताल ठोकता हुआ खड़ा हो गया। विष्णु ने उसके युद्ध-कौशल की प्रशंसा की और उन्होंने फिर से गदा को अपने हाथ में धारण किया। इसके बाद उन दोनों के बीच भयंकर संग्राम छिड़ गया। अंत में बराहाबतार ने अपने सींग के बार से हिरण्याक्ष को मार डाला।

बराहाबतार-रूपधारी विष्णु को भूदेवी ने वर लिया। बराहमूर्ति ने भूदेवी को उठा कर अपनी जांघ पर बिठा लिया। ब्रह्मा आदि देवताओं ने उन पर फूलों की बर्षा की और जगपति के रूप में अनेक प्रकार से उनकी स्तुति की।

बराहबतार लेकर अपने छोटे भाई का बध करनेवाले विष्णु से बदला लेने के संकल्प से हिरण्य कश्यप ने ब्रह्मा से वरदान प्राप्त करना चाहा। इस विचार से वह ब्रह्मा को प्रसन्न करने

के लिए तपस्या करने चला गया। उस समय उसकी पत्नी लीलावती गर्भवती थी।

लीलावती के गर्भ को विच्छिन्न करने के लिए इन्द्र ने मायाजाल रचा और उस को बन्दी बनाकर आकाश मार्ग में ले जाने लगे। उस वक्त नारद उन से मिल कर बोले-"इन्द्र! आप कैसा अन्याय करने जा रहे हैं! आप अपने प्रयत्न को छोड दीजिए। सदा सर्वदा हिरण्य कश्यप ईर्ष्यावश विष्णु का स्मरण किया करता है, इस कारण लीलावती के गर्भ में बढ़नेवाले शिशु को विष्णु का स्मरण करने की आदत पड़ गई है। विष्णु के प्रति हिरण्य का द्वेष उस शिशु के अन्दर भक्ति के रूपमें परिणत हो गया है। लीलावती महान विष्णुभक्त को जन्म देने वाली है। इसलिए आप लीलावती को मुक्त करके अपने धाम को चले जाइये।" यों समझा कर नारद लीलावती को अपने आश्रम में ले आये।

आश्रम में नारद दार्शनिक बातों के साथ-साथ विष्णु के गुणों का भी वर्णन करते जाते थे। उस समय लीलावती के गर्भ में स्थित शिशु बड़े ध्यान से सुना करता था। कालांतर में लीलावती ने एक पुत्र को जन्म दिया।

हिरण्य कश्यप ने घोर तपस्या करके ब्रह्मा को प्रसन्न किया। ब्रह्मा ने उसे वर मांगने को कहा। इस पर उसने ऐसे अनेक वर मांगे, जिनके कारण उसकी मृत्यु पृथ्वी या आकाश, दिन या रात, घर या बाहर, पशु या मानव, देवता या किसी अन्य प्राणी के द्वारा न हो। साथ ही सृष्टि के किसी जीवधारी के द्वारा भी उसकी मृत्यु न हो! ऐसे

अनेक वर उसने ब्रह्मा से प्राप्त किये।

ब्रह्मा से वर पाकर हिरण्य कश्यप जब विजय-गर्व से लौट रहा था, तो रास्ते में नारद से सारा वृत्तांत सुनकर उनके आश्रम में पहुँचा और अपने पुत्र का नाम प्रह्लाद रखा। इसके बाद पत्नी और पुत्र के साथ राजधानी लौट गया।

हिरण्य कश्यप ने सब से पहले इन्द्र से बदला लेना चाहा। उसने स्वर्ग पर हमला करके इन्द्र के सिंहासन पर अधिकार कर लिया। सारी दिशाओं पर विजय प्राप्त करके दिग्पालों को अपने अधीन कर लिया। देवताओं को खूब सताया। जब शचीदेवी का अपमान करना चाहा, लीलावती ने उसको रोका। फिरभी उसका क्रोध जब शांत न हुआ तो उसने मुनियों के आश्रमों को जला दिया। विष्णु के भक्तों पर अत्याचार करना प्रारंभ किया। अंत में विष्णु का सामना करना ही अपना लक्ष्य

मान कर उनको भड़काने की कोशिश करने लगा। फिर भी विष्णु से कहीं उसकी मुलाकात न हुई। अंत में वह वैकुण्ठ पर चढ़ाई कर बैठा। वहाँ पर भी विष्णु उसे दिखाई नहीं दिये।

"मुझ से डर कर विष्णु कहीं अदृश्य रूप में छिपे हुए हैं। कायर कहीं के!" ऐसा कहते हुए हिरण्य कश्यप अपनी राजधानी को लौट आया।

प्रह्लाद उम्र के बढ़ने के साथ विष्णु का ध्यान करने लगा। हिरण्य कश्यप यह सोच कर चिंता में डूब गया कि ऐसा वंशद्रोही उसके यहाँ कैसे पैदा हो गया। प्रह्लाद का विद्याभ्यास कराने के लिए हिरण्य कश्यप ने उसको अपने गुरुपुत्र चण्ड और मार्क के हाथ सौंप दिया।

प्रह्लाद ने गुरु कुल में हरि का ध्यान करते हुए अपनी विद्या समाप्त की। अपने सहपाठियों में भी विष्णु भक्ति का प्रचार करके उनके मन में मुक्ति मार्ग के प्रति अभिरुचि पैदा कर दी।

विद्या की समाप्ति पर चण्ड और मार्क प्रह्लाद को हिरण्य कश्यप के हाथ सौंपने के लिए आये। हिरण्य कश्यप ने अपने पुत्र को प्रेम से जांघ पर बिठाया और पूछा-"बेटा, तुम अपनी विद्या का परिचय कराने वाला एक पद्य सुनाओ!"

प्रह्लाद ने अपने मधुर कंठ से एक पद्य गाकर सुनाया, जिसका अर्थ था - "मैं ने अपने गुरुजी से सारी विद्याएँ पूर्ण रूप से सीख ली हैं! उन सभी विद्याओं में श्रेष्ठ विद्या विष्णु के प्रति चित्त लगाना है। विष्णु का स्मरण करने से प्रत्येक व्यक्ति का जन्म सार्थक हो जाता है।"

प्रह्लाद के मुँह से ये बातें सुनकर हिरण्य कश्यप क्रोध से कांप उठा और उसको अपनी जांघ पर से नीचे ढकेल दिया। तब गुरुओं से पूछा-"क्या आप ने हमारे पुत्र को यही शिक्षा दी है?"

चण्ड और मार्क दोनों थर-थर कांपते हुए बोले-"राजन, इसमें हमारा कोई दोष नहीं है! आप हम पर नाराज़ न होइए।" ऐसा कहते हुए गुरुकुल में प्रह्लाद के व्यवहार का परिचय दिया।

हिरण्य कश्यप ने अपने पुत्र को समझाया, "विष्णु ने सूअर का रूप धर कर तुम्हारे चाचा का संहार किया है। वह हमारे राक्षस कुल का परम शत्रु है! विष्णु का स्मरण करना हमारे वंश का अपमान करना है! वह अक्षम्य अपराध है। तुम उसका स्मरण करना छोड़ दो।"

प्रह्लाद ने शांत स्वर में कहा-"पिताजी, आप

दानवों के राजा हैं। मुझको शाप देने में भी आप को संकोच नहीं करना चाहिए। लेकिन मैं क्या करूँ! जैसे लोहे का टुकड़ा चुंबक की ओर आकृष्ट हो जाता है, वैसे ही मेरा मन भी विष्णु की ओर खिंचा हुआ है। जैसे भ्रमर कमल को भूल नहीं सकता है, वैसे मैं भी विष्णु को भूल नहीं सकता। यह मेरे वश की बात नहीं है। मेरे शरीर में प्राण के रहते उनको भूल जाना असंभव है। मेरी आत्मा ही विष्णु स्वरूप है।''

छोटे बालक के मुँह से ऐसी बातें सुन कर हिरण्य कश्यप विस्मय में आ गया। फिर क्रोध में आकर गरजते हुए बोला-''तब तो तुम्हारी मौत निश्चित है। तुम अन्न-जल के बिना मर जाओ!''

इसके बाद प्रह्लाद को कारागार में ढकेल दिया। पुत्र-प्रेम के कारण लीलावती तड़प उठी। लीलावती के दुख को देख हिरण्य कश्यप ने प्रह्लाद को कारागार से मुक्त कर दिया। विष्णु का ध्यान करते तन्मयावस्था में अत्यंत शोभायमान पुत्र को देख हिरण्य कश्यप यह सोचकर आश्चर्य में आ गया कि कई दिनों से अन्न-जल के बिना यह कैसे जीवित है? फिर गुस्से में आकर उस बालक को हाथियों के पैरों तले डाल दिया।

हाथी प्रह्लाद को देख घबरा उठे, मानो सिंह को देख लिया हो। महावतों ने अंकुश चलाकर बालक को हाथियों से रौंदने का प्रयत्न किया। मगर बालक का बाल भी बांका न हो सका।

सांपों से डंसवाने का प्रयत्न किया गया पर सांप बालक को चूम कर फन फैलाकर नाच उठे।

इसके बाद प्रह्लाद को पहाड़ की चोटी पर से नीचे ढकेलवा दिया गया। फिर समुद्र में फेंकवाया गया, कालकूट विष पिलवाया, फिर भी प्रह्लाद को जीवित देख हिरण्य कश्यप ने उससे पूछा, "तुम क्यों नहीं मरते? इसका क्या रहस्य है?"

प्रह्लाद ने हँसकर उत्तर दिया- "इस में कोई रहस्य की बात नहीं है! हाथियों में, सांपों में, पत्थर, अग्नि, समुद्र, जहर आदि में ही नहीं, बल्कि आप में और मेरेभीतर भी विष्णु ही विद्यमान हैं! मुझको मारने के प्रयत्न और मेरा जीवित रहना-यह सब उनकी लीलाओं का महात्म्य है, पिताजी।"

प्रह्लाद की बातों से हिरण्य कश्यप का क्रोध भड़क उठा। वह उस बालक की बाँह पकड कर सभा भवन के बीच खींच ले गया और अपना गदा हाथ में ले लिया। उस दृश्य को देख लीलावती बेहोश हो गई। चारों तरफ़ घिरे हुए राक्षस प्रमुख चकित हो मूर्तिवत खड़े रह गये।

सभा मण्डप के सामने लोहे से निर्मित एक विजय स्तम्भ खड़ा था। हिरण्य कश्यप ने वह स्तम्भ दिखा कर प्रह्लाद से पूछा-"अरे कुलद्रोही! वह मेरा विजयस्तम्भ है! मेरे छोटे भाई का वध करनेवाले विष्णु के साथ युद्ध करके तुम्हारी आँखों के सामने उसका संहार करूँगा। क्या तुम्हारा विष्णु उस स्तम्भ के अन्दर है?"

"आप को संदेह करने की कोई ज़रूरत नहीं है। वे सर्वत्र विद्यमान हैं और उसके अन्दर भी हैं।" प्रह्लाद ने झट जवाब दिया।

हिरण्य कश्यप ने तेज गति से जाकर उस स्तम्भ पर गदा से प्रहार किया। प्रलय ध्वनि के साथ पृथ्वी और आकाश गूँज उठे। धुएँ के बादल चारों तरफ़ फैल गये। स्तम्भ दो टुकड़ों में फट गया। उसके भीतर से चकाचौंध करते हुए दशावतारों में से चौथा नृसिंह अवतार धारण कर विष्णु प्रकट हुए। सिंह का सर, मानव का धड़, हाथों में सिंह के नाखून ऐसा अपूर्व रूप को लेकर नरसिंह प्रलयंकर ध्वनि के साथ गरज उठा। उस वक्त ऐसा लगा मानो पांचजन्य फूंक दिया गया हो। सुदर्शन चक्र उनके चतुर्दिक घूमते हुए दिखाई पड़े।

चतुर बालक और दुष्ट शैतान

अफ्रीका के घने और गहरे जंगल में एक गाँव थ इस गाँव में मोबुतो अपनी पत्नी जेली और चत् युवा बेटे एडने के साथ रहता था। मोबुतो ने गाँ के बाहर थोड़ी सी जमीन में कसावा (एक प्रक का अनाज) बो रखा था। मोबुतो और उसके परिवार को कसावा से बने व्यंजन बहुत पसन्द थे।

एक दिन जबकि कसावा की फसल कटाई के लिए बिलकुल तैयार थी, मोबुतो और उसकी पत्नी जेली खेत पर गए। मोबुतो ने कहा, ''कर हम कसावा का दलिया मांस के साथ खाएँगे।'

जेली को संदेह था, बोली, ''दलिया बनाने से पहले मुझे कसावा की सफाई कर उसे छीलना - कूटना होगा। यह कल तक कैसे हो सकेगा? बस, एक दिन और प्रतीक्षा करो।''

किन्तु जब वे खेत में पहुँचे, तो उन्हें गहरा धक्का लगा। खेत की अवस्था खराब थी। बहुत से पौधे जड़ से उखड़े थे और उनमें से कसावा गायब था। ''सब लुट गया।'' जेली बिलख उठी।

''यह अवश्य ही किसी जंगली जानवर का काम है।'' मोबुतो चीख पड़ा। इसके पहले कि वे हमारे बचे हुए पौधे भीनष्ट करें, हमें उन्हें पकड़ना होगा।'' उसने कहा। गहरी सोच में डूबे वे झोंपड़ी को लौट पड़े। जब एडने ने उन्हें परेशान देखा, तो उसे कारण जानने की जिज्ञासा हुई। मोबुतो ने उसे सारी बात बताई, इस पर उस चतुर बालक ने एक योजना बनाई।

'ठीक है।' जेली ने कहा। ''चलो, जानवरों को पकड़ने के लिए हम एक गड्ढा खोदें। जो जानवर एक बार आया है, वह फिर से आ सकता है, और तब हम उसे पकड़ सकते हैं। इस प्रकार हम खेत में बचे पौधे भी बचा सकते हैं और भोजन

के लिए पर्याप्त मांस भी पा जाएंगे।'' मोबुतो को योजना बहुत पसन्द आई, अतः वह फिर से खेत की तरफ गया और खुदाई में जुट गया।

जिस समय मोबुतो खुदाई कर रहा था, उसी वक्त वहां एक दुष्ट शैतान प्रकट हुआ, ''अरे! मेरे जँगल में तुम क्या कर रहे हो?'' उसने मोबुतो से पूछा। मोबुतो ने चौंक कर ऊपर शैतान को देखा तो वह डर गया। उसने शैतान और उसकी दुष्टता के बारे में सुना था, पर इतने पास से उसका सामना पहली बार हुआ था।

''मैं यहाँ जानवरों को पकड़ने के लिए गड्ढा खोद रहा हूँ, जिन्होंने मेरा खेत नष्ट कर दिया है'' वह हकलाया।

शैतान ने तेवर चढ़ाए, ''तुम मेरी अनुमति के बिना मेरे जंगल में कैसे खुदाई कर सकते हो, इसके लिए तुम्हें अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा।'' मोबुतो डर से काँप उठा, ''मुझे क्षमा कर दो शैतान महोदय, मुझे अपने बच्चों को पालना है।'' शैतान ने सोच कर कहा, ''ठीक है। मैं इस बार तुम्हें छोड़ता हूँ, मगर एक शर्त पर। जब भी गड्ढे में कोई नर-पशु गिरेगा, उसे तुम ले लेना,किन्तु जब कोई मादा गिरे तो उसे मैं लूँगा।''

मोबुतो सहमत हो गया। उसने गड्ढा खोदा और उसे पत्तियों, डण्ठलों आदि से लापरवाही पूर्वक ढक दिया और चला गया।

दूसरे दिन मोबुतो गड्ढे तक गया। तुरन्त ही शैतान भी टपका। मोबुतो ने गड्ढे में देखा, उसमें एक बन्दर था। ''यह नर है,'' वह खुशी से बोला। शैतान चला गया। दूसरे दिन मोबुतो फिर गड्ढे पर गया। उसने उत्सुकता से देखा। इस बार वहाँ एक कैरीबो था। वह पुलकित हो उठा।

प्रतिदिन मोबुतो गड्ढे की जाँच करने जाता और हर दिन उसमें एक नर पशु को पाता। कभी उसमें लकड़बग्घा होता तो कभी जंगली बिलार, कभी सूअर या जेबरा भी।

''ऐसा लगता है कि केवल नर पशुओं को ही कसावा पसन्द है।'' मोबुतो ने टिप्पणी कसी। शैतान ने उत्तर नहीं दिया।

एक महीने बाद जेली ने कसावा के खेत में जा कर पूरी फसल उठाने और नई बुआई करने का निश्चय किया। मोबुतो के सर में दर्द था।

अतः वह घर पर ही रुक गया। कई घण्टे बीत गए, किन्तु जेली नहीं लौटी। ''मुझे भूख लगी है।'' सहसा एडने बड़ बड़ाया। मोबुतो जिसे झपकी आ गई थी, जग उठा। अंधेरा तेजी से बढ़ रहा था। ''जेली को क्या हुआ?'' वह बोला।

पिताजी, चलिए, हम खेत से मां को लिवा लाएँ।'' एडने ने कहा, जो सचमुच एक होशियार लड़का था। दोनों चल पड़े। दोनों गड्ढे के पास गए। उसे खुला पा कर अन्दर देखना चाहा कि कौन सा जानवर गिरा है। उसमें जेली थी। शायद उसने ध्यान नहीं दिया और उसमें गिर पड़ी।

''इस बार इसमें एक मादा पशु है और वह मेरा है।'' निकट से एक घिनौनी आवाज आई। मोबुतो डर गया; शैतान उसी के पास था।

''ओह, नहीं! तुम उसे नहीं ले सकते। वह मेरी पत्नी है'', मोबुतो चीखा। ''तुम केवल मादा पशु ही ले सकते हो।'' लेकिन शैतान ने एक नहीं सुनी, ''मनुष्य भी एक जानवर है'' उसने छिपी मुस्कान से कहा, ''आज से वह मेरी है।''

मोबुतो तो घबराहट में हाथ मलने लगा। उसने घबरा कर हाथों में अपना मुँह छिपा लिया, किन्तु एडने इतनी आसानी से अपनी माँ को नहीं देने वाला था। ''देखता हूँ, ये कैसे लेता है मेरी मां को?'' उसने सोचा, फिर उसने शैतान से कहा, ''ठीक है, वह तुम्हारी हुई, अतः तुम गड्ढे में जा कर उसे ले सकते हो।''

''नहीं!'' मोबूतो चीखा, मैं ऐसा होते नहीं देख सकता। एडने! तुम ऐसा क्यों कहते हो?''

किन्तु शैतान हँस पड़ा, ''लो मैं गया।'' वह चिल्लाया और गड्ढे में कूद पड़ा।

''पिताजी, उठिए, अब गड्ढे में एक नर जानवर है, आइए, हम इसे पकड़ लें।'' एडने ने कहा।

मोबुतो उछल पड़ा। अब उसे समझ में आ गया कि उसके चतुर बेटे ने क्या चाल चली है। 'हा!हा!'

उसने गड्ढे में ताकते हुए कहा, ''यह नर पशु गुलाम बन कर हमारा काम करेगा।''

दुष्ट शैतान समझ गया कि वह फंस चुका है। वह मोबुतो का गुलाम नहीं बनना चाहता था। ''तुम उसे वापस ले सकते हो।'' उसने भरी हुई आवाज में कहा, औरगड्ढे सेनिकल कर चुपचाप जंगल में खिसक गया। मोबुतो और एडने ने जेली को गड्ढे से निकलने में मदद की। तीनों खुशी से नाचते हुए घर वापस आ गये।

श्रेष्ठ गुरु

विलासपुर के शासक राजा रामभद्र वृद्ध हो गये। शासन-भार अपने पुत्र वीरभद्र को सौंपते हुए उन्होंने उससे कहा, ''पुत्र, जब मैंने शासन की बागडोर संभाली, तब हमारे नागरिकों में से अधिकांश अशिक्षित थे। इस बजह से अंध विश्वासों व मूढ़ाचारों के वे आदी हो गये। ऐसा करके उन्होंने अपना ही अहित नहीं किया बल्कि समाज का भी अहित किया। इसीलिए मैंने राजधानी में एक विद्यालय की स्थापना की। परंतु सही गुरु के न होने के कारण मेरा आशय पूरा नहीं हो पाया। मुझे निराश होना पड़ा। मेरी प्रबल इच्छा है कि पहले उस विद्यालय में तुम एक ऐसे सुयोग्य गुरु की नियुक्ति करो, जो मेरे आशय को पूरा कर सके।''

वीरभद्र ने पिता की बातें ध्यान से सुनीं। उसने पिता के आशय को पूर्ण करने का दृढ़ निश्चय लिया। उसने तुरंत मंत्रियों की स भा बुलायी और इस विषय पर दीर्घ चर्चाएँ कीं।

परंतु कोई भी मंत्री ठोस सलाह दे नहीं पाया। तब उनमें से एक वृद्ध और विवेकी पंडित वाचस्पति ने राजा से कहा, ''राजन्, विद्या के प्रति जिनमें आसक्ति है, उनके लिए माता, पिता तथा आसपास की संपूर्ण प्रकृति गुरु ही हैं। ऐसे आसक्त लोगों को सक्रम पद्धति द्वारा प्रभावित करने के लिए आपके पिताजी ने राजधानी में एक विद्यालय की स्थापना की। आपके पिताजी यह आशा लिये बैठे थे कि जिन्होंने उस विद्यालय में शिक्षा प्राप्त की, वे देश भर में फैलेंगे और हमारे नागरिकों में विद्या के प्रति आसक्ति जगायेंगे और बढ़ायेंगे। लेकिन दुख की बात है कि उनसे नियुक्त गुरु इस काम में सफल नहीं हो पाये।

''इसका कारण क्या है?'' वीरभद्र ने पूछा।

''जिनमें पांडित्य है, वे बड़े पंडित मात्र ही बनकर रह जाते हैं। वे महान गुरु बन नहीं सकते।

बड़े-बड़े पंडित विद्यालय में नियुक्त किये गये, पर वे महान गुरु हो नहीं पाये। मुझे अभी-अभी लग रहा है कि गुरुओं के बडप्पन की परीक्षा लेनी चाहिये।'' वाचस्पति ने कहा।

वीरभद्र को ये बातें वास्तविक लगीं। गुप्तचरों को देश के कोने-कोने में भेजने पर उनके द्वारा उसे मालूम हुआ कि दंडकारण्य में प्रशांत और प्रसेन नामक दो प्रकांड पंडित हैं जिन्होंने कितने ही युवकों को सिद्धहस्त विद्यावान बनाया। वीरभद्र ने वाचस्पति से यह बा त बतायी और उनसे विनती की कि उन दोनों में से किसी एक की नियुक्ति विद्यालय में हो।

वाचस्पति ने क्षण भर सोचने के बाद कहा, ''राजन्, मेरी एक सलाह है। हमारे विद्यालय में प्रवेश करके, शिक्षा पाने के बाद भी जो बीस युवक विद्यावान नहीं बन पाये उनमें से दस को प्रशांत और बाकी दस को प्रसेन को सौंपें। छे महीनों की अवधि में जो सफल होगा उसे हमारे विद्यालय में गुरु नियुक्त करेंगे। राजा वीरभद्र को वाचस्पति की सलाह सही लगी।

जैसा निर्णय हुआ था, उसके मुताबिक दस विद्यार्थी प्रशांत के पास, और शेष दस विद्यार्थी प्रसेन के पास भेजे गये। प्रशांत के यहाँ जो विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे थे, छे महीनों के अंदर उनमें से तीन विद्यार्थियों ने शास्त्रों में नैपुण्य कमाया तो प्रसेन के यहाँ शिक्षा प्राप्त करनेवाले सात विद्यार्थी शास्त्रों में निष्णात बने।

तब वाचस्पति ने पहले प्रसेन से पूछा।

''बाकी तीन विद्यार्थियों के बारे में आपका क्या कहना है?''

''मेरे पास बचे शेष तीनों विद्यार्थी जन्म से ही बुद्धिहीन हैं। वे चेतनाहीन हैं, जड़ हैं, कोई भी उन्हें विद्यावान नहीं बना सकता,'' प्रेसन ने विश्वास-भरे स्वर में कहा।

इसके बाद वाचस्पति प्रशांत से मिले और पूछा, ''उन सातों विद्यार्थियों के बारे में आपको क्या कुछ कहना है?''

प्रशांत ने कहा, ''आर्य, मेरे विद्यार्थियों में से तीन विद्यार्थी बुद्धिमान हैं, इसलिए उन्होंने जल्दी ही शिक्षा प्राप्त कर ली। बाकी सातों विद्यार्थी उनकी तुलना में पर्याप्त होशियार नहीं हैं। पर मुझे पूरा विश्वास है कि और छे महीनों में उन्हें विद्यावान बनाकर रहूँगा। मुझे अवधि दी जाए तो

उन्हें उन तीनों के समकक्ष योग्य बना दूँगा।''

वाचस्पति ने यह विषय राजा से बताया और कहा कि ''राजधानी के विद्यालय में प्रशांत को गुरु नियुक्त करना अच्छा होगा।''

राजा ने इसपर आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, ''गुरुदेव, छे ही महीनों में जिस प्रसेन ने सात विद्यार्थियों को शास्त्रों में निष्णात बनाया, उसकी जगह पर उस प्रशांत को विद्यालय में नियुक्त करने की सलाह दे रहे हैं, जो केवल तीन विद्यार्थियों को ही विद्यावान बना पाया। क्या यह उचित है?''

वाचस्पति ने मुस्कुराकर कहा, ''राजन, हमारे विद्यालय के कितने ही विद्याहीन विद्यार्थियों को प्रशांत और प्रसेन विद्यावान बनाने में समर्थ हुए। इससे यह साबित होता है कि दोनों के दोनों निस्संदेह ही महान गुरु हैं। प्रसेन ने सात और प्रशांत ने तीन विद्यार्थियों को विद्यावान बनाया, पर यह उनकी प्रतिभा का मापदंड माना नहीं जा सकता । यह तो मानना होगा कि प्रसेन के विद्यार्थियों में से ज़्यादा विद्यार्थी प्रतिभावान हैं, प्रतिभाहीनों की उन्होंने भर्त्सना की, उन्हें जड़ कहा। पर, प्रशांत ने किसी भी विद्यार्थी को प्रतिभाहीन या जड़ नहीं माना। यहाँ हमें विष्णुशर्मा और तीन मूर्ख राजकुमारों की कहानी याद करनी होगी।'' कहते हुए वे रुक गये।

राजा ने कहा, ''हाँ, हाँ, याद है। फिर आगे कहिये गुरुदेव''।

''राजन, हमें एक विषय को ध्यान में रखना चाहिये। प्रशांत ने शेष सात विद्यार्थियों को विद्यावान बनाने के लिए समय मांगा। उन्होंने अपने शिष्यों की न ही भर्त्सना की और न ही उनकी ग़लती बतायी। जा` गुरु शिष्यों को चेतनाहीन मानता है, जड़ समझता है, वह गुरु हो ही नहीं सकता।इसी कारण मैंने प्रशांत को उत्तम गुरु के रूप में चुना है।''

राजा वीरभद्र ने वाचस्पति की प्रशंसा की और प्रशांत को विद्यालय में गुरु के स्थान पर नियुक्ति की। उस विद्यालय के कितने ही विद्यार्थी विद्यावान बने, विद्या के प्रसार में सहायक सिद्ध हुए और देश के नागरिकों के मानसिक विकास में सफल रहे।

बड़े घर की दावत

एक गाँव में एक धनी जमींदार था। पर बड़ा घमण्डी भी था। उस गाँव में अमीरों के घर बहुत ही कम थे। अधिकांश लोग किसान और पेशेबर थे।

जमीन्दार उन लोगों से चिढ़ा करता था। उनकी हवा लगने पर खीझकर कहता-"ये लोग बड़े ही गंदे हैं।" जमीन्दार से सौ गज़ दूर भी खड़े होने की हिम्मत किसी में नहीं थी।

एक दिन खेत में किसान डींग मार रहे थे- "आज मैं ने जमीन्दार को इतनी दूरी से देखा, उतनी दूरी से देखा।" तब एक गरीब किसान ठठाकर हँस पड़ा और बोला-"अरे भाई, अगर मैं चाहूँ तो जमीन्दार के घर दावत खा सकता हूँ। चाहो तो दाँव लगाकर देख लो!"

ये बातें सुनने पर बाक़ी किसानों को बड़ा गुस्सा आया।

"अरे, तुम्हारा चेहरा जमीन्दार के घर दावत खाने लायक़ है? तुमको उठाकर गंदे गड्ढे में फेंक देगा! क्या तुमने हम सबको बेवकूफ़ समझ रखा है?" सबने झिड़कियाँ दीं।

"मुझे डींग मारने की क्या ज़रूरत है? मैं चाहूँ तो किसी भी वक़्त जमीन्दार के घर खा सकता हूँ।" किसान ने जवाब दिया।

"अगर तुम यह काम करो तो तुमको साठ सेर अनाज और एक जोड़ा बैल देंगे। यदि ऐसा नहीं कर सकोगे तो हम जो भी काम देंगे, तुमको करना पड़ेगा। सोचकर जवाब दो।" किसानों ने चुनौती दी।

"मुझे तुम लोगों की शर्त मंजूर है।" गरीब किसान ने जवाब दिया।

उसी दिन वह गरीब किसान जमीन्दार के घर गया। पहरेदारों ने उसे भगाने की कोशिश की।

"थोड़ा ठहर जाओ। मुझे सरकार को एक शुभ समाचार सुनाना है।" गरीब किसान ने कहा।

"अरे, वह बात हम से बता दो। हम हुजूर को सुनायेंगे।" पहरेदारों ने कहा।

२५ वर्ष पूर्व चन्दामामा में प्रकाशित कहानी

"यह शुभ समाचार सरकार से मुझे खुद कहना है। तुम लोगों से कह नहीं सकता।''

पहरेदारों ने जमीन्दार के पास जाकर किसान की बात बता दी। जमीन्दार के मन में यह कुतूहल पैदा हुआ कि वह शुभ समाचार जल्दी जान ले। इसलिए जमीन्दार ने पहरेदारों को आदेश दिया कि किसान को हाज़िर करे। पहरेदारों ने किसान को जमीन्दार के सामने हाज़िर किया।

"तुम कैसा शुभ समाचार सुनाना चाहते हो?'' ज़मीन्दार ने किसान से पूछा।

"आप से मैं एकांत में ही बता सकता हूँ।'' किसान ने जवाब दिया। जमीन्दार का कुतूहल और बढ़ गया। उसने पहरेदारों को बाहर भेज दिया।

किसान ने गुप्त रूप से कहा-"सरकार, घोड़े के सर के बराबर सोने का क्या दाम होगा?''

"अरे, तुम यह बात किसलिए पूछते हो?'' जमीन्दार ने पूछा। "प्रभु! एक ज़रूरी काम से पूछ रहा हूँ। आप जानते हैं तो बता दीजिये।'' किसान ने कहा।

"वही काम बता दो।'' जमीन्दार बोला।

किसान ने गहरी साँस लेकर कहा- "आप नहीं कहना चाहते तो मैं क्या करूँ? आप की आज्ञा हो तो घर जाकर खाना खाकर लौटता हूँ। पेट में चूहे दौड़ रहे हैं।''

जमीन्दार को उसे भेजने की इच्छा न हुई। घोड़े के सर के बराबर का सोना वह हाथ से निकल जाने नहीं देना चाहता था। इसलिए नौकरों को बुलाकर कहा- "इसे भर पेट खाना खिलाओ।''

किसान भर पेट खाकर लौटा तो जमीन्दार ने उस से पूछा-"तुम जिस सोने की बात कहते हो, उसे ले आओ। तुम्हें इनाम भी दूँगा।''

"सोना? मेरे पास सोना कहाँ है सरकार? मैं यह जानना चाहता था कि साठसेर अनाज और एक जोड़ा बैल घोड़े के सर के बराबर सोने के समान होगा कि नहीं।'' किसान ने कहा।

इस पर जमीन्दार क्रोध में बोला-"कमबख्त, एक पल भी यहाँ रहोगे तो मरवा डालूँगा।''

किसान दाँव जीत लिया। उसे साठ सेर अनाज और एक जोड़ा बैल यूँ ही मिल गये।

11
शान्तिपुर की गद्दी को हड़पनेवाला वीर सिंह निराश है। जब नन्दिनी में अचानक आई बाढ़ में उसके बहुत सिपाही और हथियार बह गये तब अमृतपुर पर चढ़ाई करने की उसकी योजना असफल हो गई। सेना को और आयुद्ध चाहिये। वीर सिंह जमीन्दारों से चावल एकत्र करके चन्द्रगिरि राज्य से चावल के बदले आयुध लेने की योजना बनाता है । जनता विरोध करती है और बलपूर्वक चावल ले जाते हुए सिपाहियों से मार्ग में छीन ले लेती है।
आर्य
अज्ञात राजकुमार का रहस्य
चित्र : गाँधी अम्मा
वीर सिंह क्रोधित है क्योंकि टैक्स के रूप में चावल एकत्र करने की योजना असफल हो गई थी
हमें उन लुटेरों को अवश्य पकड़ना चाहिये।
हम उन्हें सज़ा देंगे।
वह चावल जमीन्दारों पर नया टैक्स था।
नया टैक्स?
जमीन्दारों को टैक्स देना है?
क्यों?
हम लोग चावल के बदले अस्त्र-शस्त्र लेंगे।
हमें अस्त्र-शस्त्र की आवश्यकता क्यों है?
तुम बेवकूफ हो! अस्त्र-शस्त्र युद्ध के लिए होते हैं।

लेकिन शान्तिपुर तो किसी से युद्ध करने नहीं जा रहा है।
युद्ध में हमारे कुछ आदमी और आयुध नष्ट हो गये।
तुम अपना मुँह बन्द रखो।
अचानक वातायन से एक तीर आता है, दीवार से टकरा कर नीचे गिर जाता है। स्पष्ट है कि यह कोई सन्देश लेकर आया है।
वीर सिंह अमरसिंह को तीर को उठाने से रोकता है।
यह क्या है?
बेवकूफ! जाओ और पता करो किसने तीर चलाया?
अमर सिंह अवाक् रह गया? वह बाहर देखने गया किन्तु तब तक कोई घुड़सवार तेजी से भाग निकला।
अरे, रुक जाओ!
रक्षको! रोको उसे!

अमर सिंह लौटते हुए निराश दिखाई पड़ता है। वह अभी तक वीरसिंह द्वारा किया गया अपमान सह नहीं पा रहा है।
महाराज! इस रूमाल पर कुछ लिखा हुआ है ।
हम लोग लुटेरे नहीं हैं। तुम्हारे आदमी हमारे चावल को लूट रहे थे। हम अस्त्र-शस्त्र नहीं खा सकते।
देखो! रूमाल में मेरे ही शब्दों को दुहराया गया है। इसी दरबार में कोई जासूस होगा।
वह बदमाश कौन था? क्या तुमने पकड़ा उसे?
नहीं महाराज! वह रोकने से पहले ही जा चुका था।

कोई घुड़सवार महल में आकर भाग जाता है। रक्षकों को बदल दो।
यह षड्यंत्र हो सकता है!
सीमाओं को सील बन्द कर दो। सब स्थानों पर सेना के शिविर लगा दो।
ठीक है, महाराज!
अमर सिंह अपने कमानों की बैठक बुलाता है।
हमें किसी क्षण भी अपने पड़ोसियों से युद्ध करना पड़ सकता है।
सैनिक युद्ध का अभ्यास करते हैं।
कोई घुसपैठिया आया।
मुझे मानवेन्द्र को अवश्य सूचित करना चाहिये।
क्रमशः

जल बचाओ

वीना बहुत उत्तेजित हो रही थी। वह चेन्नई में अपने अंकल के घर जा रही थी।

जब टैक्सी रेलवे स्टेशन से चली तो वह गगनचुम्बी अट्टालिकाओं और खास-खास इमारतों को ध्यान से देखने लगी। अंकल के घर पर टैक्सी के रुकते ही अंकल, अंट रेनू और अजय तथा विजय– उनके दोनों बच्चों ने प्रसन्नता के साथ उसका स्वागत किया।

वीना हाथ-मुँह धोना चाहती थी। अंटी ने बाथरूम दिखाते हुए कहा, "हमलोगों को सुबह और शाम को केवल एक घण्टे के लिए पानी मिलता है। बालटियों में हमलोगों ने काफी पानी जमा कर लिया है। फिर भी पानी बचा कर खर्च करना।"

वीना को आश्चर्य हुआ। अन्दर खड़ा होने को भी जगह नहीं थी। अंटी ने कहा, "पानी इतने कम समय के लिए आता है कि हमें जमा करके रखना पड़ता है। अन्यथा जरूरत पड़नेपर एक बून्द भी पानी नहीं मिलेगा।"

वीना उदास हो गई। "अंटी, अप ने यहाँ हमलोग दिन भर बहुत पानी खर्च करते हैं। ताज्जुब है, आप कैसे काम चलाती हैं?"

अंट रेनू ने कहा, "हमलोग पानी बचाने के लिए अनेक तरीके अपनाते हैं। बर्तनों को साफ करते समय चिकनाई लगे बर्तनों को पहले से ही पानी में डाल देते हैं जिससे उन्हें धोने में कम पानी लगता है। फलों और सब्जियों को कटोरे में पानी डाल कर धोते हैं। वाशिंग मशीन मैं तभी चलाती हूँ जब पूरी मशीन भर के लिए कपड़े इकट्ठे हो जाते हैं, क्योंकि इसमें पानी बहुत खर्च होता है। यदि घर के किसी नल की टोटी में से पानी टपकता है तो तुरन्त उसकी मरम्मत कराते हैं। हमलोगों ने अपने भवन में वर्षा-जल हारवेस्टिंग सिस्टम भी लगा लिया है। इन सबसे काफी मदद मिलती है।"

वीना ने बताया, "अंटी, मैं अब जल का महत्व समझ गई हूँ। मैं भरसक प्रयास करूँगी कि जल कम से कम खर्च करूँ।"

आप के पन्ने आप के पन्ने

विज्ञान तुम्हारे लिए

हो हम्म्म्म्....

हम्म्म्म्..... । नहीं, भागो नहीं । यह डंक मारनेवाली मधुमक्खी नहीं है । यह केवल मर्मर पक्षी (हम्मींग बॅड) है जिसके पंखों की फड़फड़ाहट बहुत तेज होती है । यह एक विचित्र उड़ाकू पक्षी है । जबकि अधिकांश पक्षी अपने पंखों की गति को आगे बढ़ाते हुए उड़ते हैं, मर्मर पक्षी हवाई कलाबाजी करता है । यह हेलिकॉप्टर की भाँति उड़ता है । यह हेलिकॉप्टर के समान दायें, बायें, ऊपर, नीचे, पीछे, यहाँ तक कि उलटा होकर उड़ सकता है । इसका फ बिलक्षण करतब यह होता है कि यह फूल के ऊपर, उसका रस चूसते समय, आकाश में बिना गति के मंडरा सकता है ।

यह पक्षी एक सेकेण्ड में ५० से ६० बार तक अपने पंखों को फड़फड़ा सकता है । कुछ दक्षिण अमरीकी मर्मर पक्षी एक मिनट में पाँच हजार बार अपने पंख फड़फड़ा सकता है । इसका अर्थ यह हुआ कि उसके पंखों को सिर्फ धब्बे के रूप में देख सकते हैं । उड़ने की पर्याप्त शक्ति के लिए पक्षी को दिन भर लगभग हर १० मिनट पर खाना अवश्य मिलना चाहिये ।

तुम्हारा प्रतिवेश

रेगिस्तान शरण्य हो सकते हैं

बड़े रेगिस्तान जीव-जन्तुओं के लिए निश्चित रूप से सभी शरण-स्थलों में सबसे अधिक अशरण्य होते हैं ।

इन बंजर क्षेत्रों में यहाँ के मूल निवासी पशुओं को अत्यधिक गर्मी, ज ल का अभाव, सूर्य और परभक्षियों से बचाव की कमी झेलनी पड़ती है । लेकिन बिकासक्रम जटिल से जटिल समस्याओं के समाधान का मार्ग निकाल लेता है ।

ऐसा ही एक दृष्टान्त आगमा का है जो अफ्रीका के बंजर और पथरीले रेगिस्तानों में पाया जानेवाला एक छिपकली है । सिर्फ उत्तर-पूर्वी अफ्रीका में पाया जानेवाला काँटेदार पूँछ का आगमा अपने शक्तिशाली पंजों से दो मीटर लम्बा बिल खोद सकता है जिसमें बह दिन की गर्मी और रात के शीत से अपना बचाव करता है ।

आगमा की काँटेदार पूँछ अपनी सुरक्षा तथा आक्रमण करने का शक्तिशाली शस्त्र है ।

आप के पन्ने आप के पन्ने

क्या तुम जानते थे?

गिरी का गुरुत्व

सुपारी के वृक्ष की उपयोगिता मुख्यतः उसकी गिरी में है जिसका बहुत व्यापारिक महत्व है। गिरी में टैनिन होता है जो काली और लाल स्याही बनाने में प्रयोग में लाया जाता है। गिरियों को भुनकर और चूर्ण बनाकर दन्तमंजन के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।

सुपारी वृक्ष सीधे और पतले धड़ के कारण, जो

१८ से २० मीटर तक ऊँचा होता है, देखने में मनोहर लगता है। इसमें शाखाएँ नहीं होतीं। धड़ का व्यास लगभग १५ से.मी. होता है। सुपारी वृक्ष ५ वर्ष की आयु से ही फल देना शुरू कर देता है। एक वृक्ष एक वर्ष में ३०० फल तक दे सकता है। ये वृक्ष आम तौर पर केरल, प.बंगाल तथा आसाम में पाये जाते हैं, जहाँ काफी वर्षा होती है।

अपने बौद्धिक स्तर की जाँच करो

भारतीय संसद

१. लोक सभा के सदस्यों की वर्तमान संख्या कितनी है?

२. भारत के प्रधान मंत्री की नियुक्ति कौन करता है?

३. मतदान करने की उम्र कितनी है?

४. भारत के उपराष्ट्रपति का चुनाव कौन करता है?

५. संविधान में भारत को किस रूप में वर्णित किया गया है?

६. संविधान द्वारा कितने मौलिक अधिकारों का आश्वासन दिया गया है?

(उत्तर ६६ पृष्ठ पर)

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

TAJY PRASAD

NARAYANA MURTHY TATA

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,

प्लाट नं. ८२ (पु.न.९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई - ६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

बधाइयाँ

मार्च अंक के पुरस्कार विजेता हैं :

शशि दीक्षित,

हाउस नं. ७२१-बी, सेक्टर - ३६ बी,

बी.बी.एम.बी. फ्लैट्स, चण्डीगढ़ - १६० ०३६.

विजयी प्रविष्टि

धूप, भूख, निर्धनता।
सुख, सुविधा, सम्पन्नता ॥

'अपने बौद्धिक स्तर की जाँच करो' के उत्तर

१. ५४३ (तथा दो मनोनीत सदस्य)

२. भारत का राष्ट्रपति, पार्टी के द्वारा नेता के चुनाव के बाद

३. १८ वर्ष

४. लोक सभा तथा राज्य सभा के सदस्य सम्मिलित बैठक में

५. सोवरन सोशलिस्ट सेकुलर डेमोक्रैटिक रिपब्लिक (प्रभुसत्ता सम्पन्न समाजवादी धर्मनिरपेक्ष प्रजातांत्रिक गणतन्त्र)

६. ७ (सात)

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : B. Viswanatha Reddi (Viswam)